संदेश

माननीया प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

एव

राष्ट्रीय युवा नेता सजय गाधी

के

२५ सूत्री आर्थिक कार्य-क्रमो को निष्ठापूर्वक क्रियान्यवन हेतु

सतत प्रयत्नशील

उत्तर प्रदेश के यशस्वी

मुख्य मत्री श्री नारायणदत्त जी तिवारी

की

५१ वी वर्षगाठ

पर

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय,

हरिद्वार

उनका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

डॉ० गंगा राम
कुलपति

स्वामी इन्द्रवेश
कुलाधिपति

संदेश

युवा सन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के शुभागमन से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में एक नया जीवन आ गया है। स्वामी जी महाराज का स्वप्न गुरुकुल को उसी चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने का है जिसकी कल्पना गुरुकुल के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की थी। हम सभी कुलवासियों का यह पावन कर्तव्य है कि हम इस महान् यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति देकर इस यज्ञ को सफल बनायें।

डॉ० गंगाराम
कुलपति

★ अनुक्रम ★

★ सम्पादक मण्डल ★

हमें ऐसे शक्तिशाली और गतिशील भारत का निर्माण करना है, जहाँ व्यक्ति अपने धर्म, अपनी भाषा या प्रांत के बारे में न सोच कर सिर्फ भारत के बारे में सोचें।

- इन्दिरा गांधी

कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी अप्रैल १९७४ के दीक्षांत समारोह के अवसर पर नव स्नातकों को आशीर्वाद देते हुए ।

वेदों के प्रकाड पंडित, दर्जनों पुस्तकों के लेखक, भारत तथा उत्तर-प्रदेश सरकारों द्वारा पुरस्कृत स्वामी ब्रह्म मुनि जी महाराज, विजीटर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, अप्रैल १९७४ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए ।

श्री नाथूराम जी मिर्धा वृक्षारोपण करते हुए ।

कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज और श्री नाथूराम जी मिर्धा
वार्तालाप की मुद्रा मे ।

ओ३म्

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालयस्य मासिक पत्रिका]

आसाढ़-आश्विन : २०३३, जून-सितम्बर १९७६, वर्षम्-२९, अङ्कः८, पूर्णाङ्कः ३२९

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः ।

ऋग्वेद ४।३३।११

(श्रान्तस्य ऋते) परिश्रम के विना (देवा.) देव (सख्याय) मित्रता नहीं करते । अर्थात् जो परिश्रम करता है उसी की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है । जो पुरुषार्थ नही करता उसकी उन्नति नही हो सकती ।

इस प्रकार वेद में पुरुषार्थ को उन्नति का मूल बताया गया है ।

—●—

सम्पादकीय :-

गुरुकुल प्रगति के पथ पर

माननीय श्री नारायण दत्त तिवारी, मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ से मार्ग-दर्शन प्राप्त कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी १५ जुलाई, '७६ को प्रातः विश्वविद्यालय परिसर में पधारे तथा ११ बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय का पूर्ण नियन्त्रण अपने आधीन ले लिया। स्वामी जी ने स्पष्ट घोषणा की कि वे स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित इस महान संस्था के लिए पूरी शक्ति से कार्य करेंगे। स्वामी जी के पदार्पण से गुरुकुल का वातावरण पुनः शान्त एवं पवित्र हो गया तथा विश्व-विद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारी, छात्र एव अधि-कारी देश की प्रगति एवं प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के २० सूत्री कार्य-क्रम तथा युवा नेता संजय गाधी के ५ सूत्री कार्य-क्रम को क्रियान्वित करने मे संलग्न हो गये तथा सभी ने प्रगतिशील कार्यों मे निरन्तर तत्परता का संकल्प लिया।

गुरुकुल की व्यवस्था को सुचारुता प्रदान करने हेतु कुछ नियुक्तियां अत्यावश्यक थी जिसकी ओर स्वामी जी का ध्यान गया। १८ जुलाई को विश्वविद्यालय परिसर में सीनेट की बैठक अत्यन्त उत्साहमय वाता-वरण में सम्पन्न हुई जिसमे सर्वसम्मति से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी ब्रह्म मुनि जी को विश्वविद्यालय का नया विजिटर नियुक्त किया गया। स्वामी जी वेदो के प्रकाण्ड पण्डित तथा निरुक्त, उपनिषदो, सामवेद, प्राचीन ग्रन्थ, वृहद् विमान-शास्त्र एवं दर्शनों ग्रन्थ प्राचीन ग्रन्थो के भाष्यकार हैं। आपकी अनेक रच-नाएं विभिन्न प्रान्तीय सरकारो तथा केन्द्र सरकार द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत की जा चुकी हैं। आपने वैदिक सिद्धान्तो पर सैकड़ों अन्य ग्रन्थ लिखे हैं।

डॉ० गंगाराम गर्ग कुलपति नियुक्त हुए हैं। आप गत २४ वर्षों से गुरुकुल की सेवा कर रहे हैं। जिसमे गत दस वर्षों से कुलसचिव का कार्य कर रहे थे आप हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य के प्रमुख विद्वान हैं तथा अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिसमें एक ग्रन्थ ऑक्स-फोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित हो चुका है। आर्य समाज एवं गुरुकुल मे अगाध विश्वास है आपके लड़के-लड़कियो के विवाह अन्तर्जातीय हुए हैं तथा लड़के गुरुकुल के स्नातक हैं।

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय आचार्य एवं उपकुल-पति नियुक्त हुए हैं। ये वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्या-लय वाराणसी के परीक्षाधिकारी एवं कुलसचिव तथा दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली मे संस्कृत विभाग के प्राध्यापक रह चुके है। संस्कृत, हिन्दी, बगला तथा अंग्रेजी भाषा के पडित है। अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। साहित्य के साथ-साथ दर्शन मे भी समान गति है। आर्य समाज के प्रति अपूर्व निष्ठा है जो उनकी पैत्रिक दाय एवं अर्जित सम्पत्ति है।

प्रो० बलजीत सिंह आर्य जनता वैदिक कालेज बड़ौत के भूतपूर्व सहायक आचार्य (एसोशिएट प्रोफेसर) कृषि प्रसार, भूतपूर्व प्राचार्य नवां शहर, कुल-सचिव नियुक्त किये गये हैं। आर्य समाज में अगाध निष्ठा है। सैकड़ों नवयुवकों को इस पथ पर लाने का इन्हे श्रेय है। डॉ० कश्मीर राही भूतपूर्व प्रवक्ता इतिहास विभाग, रोहना उपकुलसचिव एवं साधूराम संख्यानक नियुक्त किये गये हैं।

विश्वविद्यालय में ही नहीं गुरुकुल में भी अनेक नियुक्तियां हुई हैं। श्री शिवचरण विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य कर रहे हैं। घासीपुर गुरुकुल के भू० पू० प्राचार्य श्री अनूप सिंह शास्त्री जिन्होने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से शास्त्री एवं गुरुकुल किरठल से वाचस्पति की परीक्षा उत्तीर्ण की है के प्रधानाचार्य रूप मे कार्य भार संभाल लेने से विद्यालय का अध्ययन–अध्यापन व्यवस्थित एवं पूर्ण अनुशासन मे चल पड़ा है।

राजकीय फल अनुसंधान केन्द्र बस्ती के भूतपूर्व हार्टी कल्चर निरीक्षक एवं राजकीय बीज निगम के भूतपूर्व सहायक बीज उत्पादक श्री ओमपाल एम.एस-सी. एग्रोनामी कृषि अधीक्षक के रूप मे कार्य कर रहे है। जिन्होंने अस्त-व्यस्त कृषि व्यवस्था को पूर्ण नियन्त्रित कर लिया है। गुरुकुल भूमि शस्य-श्यामला एवं हरित-क्रान्ति लिए हुए दृष्टिगोचर हो रही है।

युवा हृदय सम्राट एवं युवा नेता संजय गांधी के ५ सूत्री कार्यक्रम को पूर्ण रूपेण क्रियान्वित किया जा रहा है। वृक्षारोपण सप्ताह का उद्घाटन राष्ट्रीय कृषि के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री नाथूराम मिर्धा ने किया जिसके अन्तर्गत गुरुकुल भूमि मे दो हजार वृक्ष लगाये गये जिससे परिसर के सौन्दर्य मे अभि-वृद्धि तो हुई ही है अनेक प्राकृतिक लाभ भी हुए है।

द्वारविहीन १८ कमरे खाली पड़े थे अब उनमे कक्षाएं चल रही हैं। विश्वविद्यालय मे इसी सत्र से तीन विषयो से बी ए. की कक्षाएं प्रारम्भ की गई हैं। जिसमें १२ छात्रो ने प्रवेश लिया है। उनका अध्ययन अलंकार के छात्रो के साथ होता है। इसे विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी कक्षा होने का गौरव प्राप्त है। बी.ए. कक्षा में तीन मुस्लिम छात्रों ने भी प्रवेश लिया है जो हिन्दी साहित्य का अध्ययन ही नहीं करते अपितु हिन्दी के प्रतिभाशाली छात्रों में हैं।

गत वर्ष "छात्र कल्याण कोष" की स्थापना हो चुकी है इस वर्ष "प्राध्यापक कल्याण कोष" की स्थापना प्रायः हो चुकी है। निकट भविष्य में विधिवत कार्य सम्पन्न होगा।

वर्तमान आपात-कालीन स्थिति में हमारे अधिकारियों - कर्मचारियो एवं अध्यापकों - छात्रों ने जिस सुन्दर अनुशासन का परिचय दिया है, वह इस बात का द्योतक है कि हमारे चरित्र में देश की स्वतन्त्रता को बनाये रखने और उसे सुदृढ बनाने की क्षमता विद्यमान है। इसी के परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय का प्रशासन तथा अध्ययन – अध्यापन अतीव शान्त, व्यवस्थित एवं निष्ठापूर्ण वातावरण में प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

घटे मूल्य की पुस्तकें एवं अभ्यास पुस्तिकाएं सुलभ रूप से सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराने, छात्रावास मे विद्यार्थियों को सस्ते दामों पर खाद्यान्न तथा अन्य आवश्यक सामग्री सुलभ रूप से उपलब्ध कराने, निर्बल वर्ग के छात्रों के लिए बुक-बैंक की योजना बड़े पैमाने पर लागू करने हेतु गुरुकुल विश्वविद्यालय सतत प्रयत्नशील है। माननीय प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीस सूत्री एवं युवा नेता संजय गांधी के ५ सूत्री कार्य–क्रम को सफल बनाने तथा इसे सक्रिय रूप प्रदान करने हेतु आओ हम सब पुनश्च दृढ़ संकल्प लें। अस्तु।

–रामाश्रय मिश्र

सर्वेगुणा नायकमाश्रयन्ति

यस्यास्ति सता स नरः प्रवीणः सदाव वक्ता स च दर्शनीयः
सदाव धीमान् धनवान्तथाहि सर्वेगुणा नायकमाश्रयन्ति ॥१॥

स्वयं जनेशः जनता न गण्या मताधिपत्येन सदा प्रतिष्ठः
मतं न लोकस्य मुखरी करोति पदं स्वकीयं सततं वृणोति ॥२॥

पदं मदीयं च मतं त्वदीयं धनं मदीयं यतनं त्वदीयम्
गीतं मदीयं श्रवणं त्वदीयं ममास्ति सर्व तवनास्ति किंचित् ॥३॥

पदं विलासाय मतं तदर्थं मुखं विवादाय च जल्पनार्थम्
मुखं स्वदीयं प्रचुरं प्रपुष्टं मुखं न लोकाभिमुखं करोति ॥४॥

नाश्वासनस्य प्रतिपालनं च क्रिया विरक्तः पटुतानकार्ये
प्राप्ता न विद्या न च पात्रताहि स्वामित्व भोक्ता जनता कियंता ॥५॥

लोकादरान्ने नृपदे सदैव पदेषुसक्तः जनताभिषिक्तः
धनानुरक्तः न च कर्म सिद्धः सन्मानलुब्धः पदानुसक्तः ॥६॥

कृतिर्विभिन्ना मतयो विभिन्नाः नैकोऽपि नेता वचने प्रमाणम्
नयस्य तत्त्वं कठिणं निकामं नेता न जानाति न चानुयायी ॥७॥

—जयेशः

राजस्थान के भूतपूर्व-मंत्री श्री नाथूराम जी मिर्धा ८ अगस्त, १९७६ को गुरुकुल पधारे। कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने मिर्धा जी को माल्यार्पण किया। कुलपति डॉ० गगाराम माला लिये स्वागत के लिए खडे हैं।

श्री नाथूराम जी मिर्धा आयुर्वेद संग्रहालय मे बीच मे खडे है स्वामी इन्द्रवेश जी और उनके साथ है आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ० अनन्तानन्द जी।

श्री नाथूराम जी मिर्धा गुरुकुल संग्रहालय में।

मिर्धा जी का परिचय देते हुए स्वामी इन्द्रवेश जी। स्वामी जी के बायी ग्रोर हैं डॉ० ग्रनंतानन्द जी, प्रिंसिपल ग्रायुर्वेद महाविद्यालय, श्री सुरेश चन्द्र जी, प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय, श्री कश्मीर सिंह, उपकुलसचिव ग्रौर श्री शिवचरण सहायक मुख्याधिष्ठाता। कुलपति डॉ० गगाराम ठीक बाईं ग्रोर बैठे हैं।

१५ ग्रगस्त १६७६ को कुलपति डॉ० गंगाराम विश्वविद्यालय मे ध्वजारोहण करते हुए।

श्री नाथूराम जी मिर्धा गुरुकुल वासियो को संबोधित करते हुए।

"अर्थापत्तौ भाट्टमतम्"

"अर्थापत्तिरपि दृष्टः श्रुतो वार्थोऽन्यथा नोपपद्यत इत्यर्थकल्पना"; यथा जीवतो देवदत्तस्य गृहाभावदर्शनेन बहिर्भावस्यादृष्टपरिकल्पना इति शाबरं भाष्यम्। १

दृष्टोऽर्थ -प्रत्यक्षादि प्रमाणपञ्चकेन प्रमित इत्यर्थ। श्रुतोऽर्थः-शब्द प्रमाणप्रमित इत्यर्थ। श्रुत इति पृथगुपादानाच्छ्रुतातिरिक्तप्रमाणप्रमितो दृष्टपदार्थ कल्पनीयः। अयमेव गोबलीवर्दन्याय इत्यावक्षते न्यायविद। अतएव दृष्टार्थपत्त्या श्रुतार्थपत्तिर्भिन्नेति परिगण्यते। एवञ्च प्रमाणषट्केन प्रमितस्यार्थस्यार्थान्तिरेण विनाऽनुपपत्तिमालोच्य तदुपपत्तये या अर्थान्तिरकल्पना सार्थापत्तिरिति लक्षणार्थस्सम्पन्न।

तथा च-अर्थस्यापत्ति: - कल्पना यस्मादिति व्युत्पत्या प्रमाणपरः, अर्थस्यापत्तिरिति षष्ठीसमासेन च फलपरः अर्थापत्तिशब्दः। तत्र दृष्टार्थापत्ति प्रमाणपञ्चकपूर्विका पञ्चविधा, श्रुतार्थापत्तिस्त्वेकविधा। दृष्टार्थापत्तावर्थस्य कल्पना, श्रुतार्थापत्तौ तु शब्दरूपं प्रमाणं कल्प्यते। पञ्चविधाया दृष्टार्थापत्तेरिमान्युदाहरणानि।

प्रत्यक्षपूर्विकार्थापत्तिः

(१) तत्र दाह प्रति वन्हेः कारणत्वं क्वचित्प्रत्यक्षतो ऽनुभूयते, २ क्वचिच्च सत्यपि वन्हौ दाहो नानुभूयते। अत प्रत्यक्षप्रमितस्य दाहस्यान्यथानुपपत्त्या वन्हेर्दाहकत्वशक्ति कल्प्यते। इयमेव प्रत्यक्षपूर्विका।

नैयायिकास्तु-दाहत्वावच्छिन्न प्रति मण्याद्यभावविशिष्टवन्हित्वेन कारणतास्वीकारेण प्रतिबन्धकमणिसमवधानदशायां दाहापत्तिवारणे सति शक्तिर्नाम्नी कर्तव्येति वदन्ति। तत्र दाह प्रति क्वचित् मण्याभावविशिष्टवन्हित्वेन क्वचिच्च वन्हिविशिष्टमण्याभावत्वेन, क्वचिदोषध्यभावविशिष्टवन्हित्वेन, क्वचिच्च वन्हिविशिष्टौषध्यभावत्वेन' क्वचिन्मन्त्राभावविशिष्ट वन्हित्वेन, क्वचिच्च वन्हिविशिष्टमन्त्राभावत्वेनेत्येवमनन्ताः कार्यकारणभावा भवेयुरित्यतिरिक्त शक्तिकल्पनमेव ज्याय इति मीमांसकाः पश्यन्ति। तत्रातिरिक्तशक्तिस्वीकारेऽपि तस्या आनन्त्यं प्रागभावध्वंसाश्चानेके कल्पयितव्या एवेति मीमांसकानामपि गौरवमापतत्येव, तथापि फलमुखगौरव न दोषायेति न्यायेन शक्तेरेव कारणत्वमर्थापत्त्या स्वीकुर्वन्ति।

(२) एव देशान्तरप्राप्तिर्लिगकेनानुमानेन भास्करे गतिमनुमाय तदन्यथानुपपत्त्या तत्र गमनशक्तिकल्पना र्थापत्या भवति। इयमनुमानपूर्विकार्थापत्तिः।

१— शबर भाष्य अ० १, सू० ५, पृष्ठ १२,

२— "तत्र प्रत्यक्षतो ज्ञाताद् दाहाद् दहनशक्तिता।
वन्हेरनुमितात्सूर्ये यानात् तच्छक्तियोग्यता॥

श्लोकवार्त्तिकम्

औत्पत्तिकसूत्रे अर्थापत्तिपरिच्छेद श्लोक-३

(३) "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते" इति श्रुतेन वाक्येन दिवा भुञ्जाने देवदत्ते पीनत्वरूपो योऽर्थः प्रमितः तदन्यथानुपपत्तिमालोच्य तदुपपत्तये "रात्रौ भुङ्क्ते" इति रात्रिभोजनरूपार्थप्रतिपादकवाक्यान्तरस्य कल्पना । यद्यपि दिवा वाक्यप्रमितस्यार्थस्योपपत्त्यर्थं रात्रिभोजनरूपार्थस्यैव कल्पनमुचितम्, तथापि "शाब्दः शाब्देनान्वेति" "न हि शाब्दमशाब्देनान्वेति इति" वा न्यायेन श्रुतवाक्यप्रतीयमानार्थान्यथानुपपत्ति प्रतिसन्धानपुरस्सर तदुपपत्तये आकाङ्क्षितस्यार्थान्तरस्य तद्बोधकेन वाक्येनैव समर्पणं युक्तम् । सेयं शब्दपूर्विका प्रमाण ग्राह्यर्थापत्ति ।

(४) गवयदर्शनादेतत्सदृशो गौरिति यदविगवयसादृश्यमुपमितं तदन्यथानुपपत्त्या तादृशसादृश्यविशिष्टगवि तादृश प्रमाविषयत्वशक्तिरस्तीति कल्पना उपमानपूर्विका-र्थापत्तिरिति परिगण्यते ।

शब्दस्यार्थबोधान्यथानुपपत्त्या वाचकशक्तिं कल्पयित्वा पुनस्तदनुपपत्त्या शब्दस्य नित्यत्वकल्पना-अर्थापत्ति-पूर्विकार्थापत्तिः सेयमर्थापत्तिः 'नित्यस्तु स्याद्दर्शनस्य परार्थत्वात्'[1] इति सूत्रयता भगवता जैमिनिना बोध्यते । तथाहि दृश्यते शब्दोऽनेनेति व्युत्पत्त्या दर्शनशब्द उच्चारणार्थकः । यदि शब्दो नित्यो न भवेत् तदा परार्थं परानर्थं प्रत्याययितुं दर्शनमुच्चारणं नोपपद्येतेति सूत्रार्थः । परार्थं यदुच्चारणं न तत्स्वतः फलरूपम् । तस्य चान्येन केनचित्फलेन भवितव्यम् । तदालोचनाया फलवतो गवानयनादि व्यापारस्याङ्गभूतो यो गवानयनादिरूपार्थप्रत्ययः स तत्फलेनैव फलवान् इति शब्दस्योच्चारण-संस्कृतस्य फलसाकांक्षस्य फलमिति योग्यतयावधार्यते । तादृशार्थप्रत्ययफलकत्वञ्च शब्दस्य नित्यत्वमेवोपपद्यत इति भावः ।

(५) अनुपलब्धिपूर्विकार्थापत्तिर्भाष्यकारेणैवोदाहृता "जीवति देवदत्ते गृहाभावदर्शनेन बहिर्भावस्यादृष्टस्य कल्पना" इति । जीवितो देवदत्तस्य गृहे भावः योग्यानुपलब्ध्या प्रमितः तदन्यथानुपपत्त्या च बहिर्भावस्य प्रमाणान्तरागम्यस्य या कल्पना सानुपलब्धिपूर्विकार्थापत्ति-रित्यर्थो भाष्यसन्दर्भस्य । अत्रेयमाशंका-वन्हिमन्तरेणानुपपन्नाद्धूमाद्वन्हिर्यथानुमीयते, तथा-अनुपपन्नादुपपादक कल्पनायामनुमानमेवायाति । कथमर्थापत्तिः प्रमाणान्तरमिति । अनुमानेऽनुपपन्नं गमकं भवति, अर्थापत्तौ तु तदनुपपन्नं तदेव गम्यं भवतीति प्रमाणान्तरत्वमर्थापत्तेः । अनुमाने निश्चितं लिंगं भवति । यस्य हि जीवनं गृहसम्बन्ध्येव प्रायशोऽवगतं, तस्य कदाचिद्गृहाभावे प्रत्यक्षीकृते जीवनं सांशयिकं भवद्बहिर्भावकल्पनाया समाधीयते । यथा ह्यनुमाने निश्चितलिंगं तथार्थापत्तौ केनचित्प्रमाणेनावगत प्रमाणान्तरेणोत्थापितवितर्कं गमक भवतीति दर्शनबलादभ्युपगम्यते । न प्रमाणयोरन्यतरत्रापि संशयः, किन्तु निश्चितप्रमाणयोरेव चात्र प्रमाणयोरेव द्वयोः समर्थनापेक्षामात्रं कथमिदमुभयमुपपद्यत-इति । यथा..."नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति" अतिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति इत्यत्र ग्रहणाग्रहणशास्त्रयोः । अत्रैकपरित्यागेन नेतरदुपपादयितुं शक्यते । अतो यथा तत्र कथमिदमुभयमुपपद्यतामित्यपेक्षिते प्रयोगभेदेनोभयमुपपद्यते, एवमिहापि प्रमाणप्रतिपन्नमुभयं निश्चित सद्भावमर्थान्तरपरिकल्पनया समर्थ्यते । तदिदमुक्तं

---

[1] जै० सू० १८, पृष्ठ ३३

[2] "उच्चरितमात्रे हि विनष्टे शब्दे न चान्योन्यायर्थं प्रत्याययितुं शक्नुयात् । अतो न परार्थमुच्चार्यते । अथ न विनष्टः ततो बहुश उपलब्धत्वादर्थावगम इति युक्तम्" इति शाबरं भाष्यमत्रोपष्टम्भकम् ।

पृ० ३२, १.१.१८

वार्तिककारैः—

> अन्यथानुपपत्तौ तु प्रमेयानुप्रवेशिता ।
> तादृरूप्येणैव विज्ञानात्र दोषः प्रतिभातिनः ।।

.. श्लोक वा० ५-२९.

इत्यादिना ।

किं च, नैयायिकाः-लिंग-अन्वयव्यतिरेकिकेवलान्वयि-केवलव्यतिरेकि इति त्रिविधमंगीकृत्य केवलव्यतिरेकिणार्थापत्तेश्चारितार्थ्यं वदन्ति । साध्याभावव्यापकीभूताभावप्रतियोगित्वमेव केवलव्यतिरेकत्वम् । अतएव विश्वनाथो भाषापरिच्छेदे-

> "अर्थापत्तिस्तु नैवेह प्रमाणान्तरमिष्यते ।
> व्यतिरेकव्याप्तिबुध्या चरितार्था हि सा यतः ।।"

..का० १४४ (अर्थापत्तेरनुमानेऽन्तर्भाव.)

इति वदति ।

मीमांसकास्तु—केवलव्यतिरेकिणमनंगीकृत्य तत्स्थानेऽर्थापत्तिं स्वीकुर्वन्ति । अनुमाने उपपादकं गम्यम् अनुपपन्न च गमकम्, अर्थापत्तौत्वनुपपन्नं गम्यम् उपपादक च गम्यकम् इति भेदः । व्याप्तिपक्षधर्मताभ्यामनुमितिर्जायते, दिवा भोजनत्वाभाववीनत्वयोस्सामानाधिकरण्यरूपानुपपत्तिज्ञानादर्थापत्तिरिति सामग्रीवैलक्षण्येनोभयोर्भेद । अनुमितौ अनुमिनोमीत्यनुव्यवसायः । अर्थापत्तौ तु कल्पयामि अर्थापयामिति वानुव्यवसायः । तेन च तयोर्भेद. ।

"अर्थापत्तौ प्रभाकरमतम्"

प्राभाकरास्तु दृष्टार्थापत्तिमेवांगीकुर्वन्ति, श्रुतार्थापत्तिं नांगीकुर्वन्ति । भाष्यगतं श्रुतपदं गोवलीवर्दन्यायेनोपलब्धपरतया नयन्ति । किन्तु भाट्टमते गोवलीवर्दन्यायेन संकोचः, प्रभाकरमते तु असंकोचः । स चोपालब्धोऽर्थः अर्थान्तरानुपपत्त्यापादकतया विवक्षितोऽर्थान्तरकल्पको गृह्यते । तथा चायं फलितोऽर्थ. -अर्थान्तरकल्पनायामसत्यां योऽर्थान्तिरमनुपपन्नं कुरुते सार्थापत्ति. । अनुपपत्तिश्च सन्देहरूप एव । प्रमीयतेऽनेनेति करणव्युत्पत्त्यंगीकारेऽर्थसन्देहापादकोऽर्थ प्रमाणम्, बहिर्भावकल्पना प्रमा, कल्पितोऽर्थ प्रमेयम । प्रमितिः प्रमाणमिति भाव व्युत्पत्त्यभ्युपगमे कल्पनाप्रमाणम् तदनन्तरमावि देवदत्तो बहिर्भाववान्" इति विशिष्टज्ञानं फलमिति विवेक. ।

अर्थापत्तेरनुमानान्तर्भावश्च पूर्ववदेव । बहिर्भावसाधकानुमाने " देवदत्त बहिर्भाववान् गृहे सत्वात् " इत्यत्र गृहाधिकरणाभावप्रतियोगित्वं हेतु, तद्विशिष्ट–जीवनवत्वं वा । तत्र प्रथमपक्षे मृतेऽपि हेतोस्सत्वेन व्यभिचार, द्वितीयपक्षं बहिर्भावस्यानुमित्सितत्वेन तस्य प्रागेव निर्णीतत्वेन न किंचिदनुमेयमवशिष्यत इति सिद्धसाधनं दोष । तदिदमुक्तम् –

> "तेन मेयानपेक्षस्य सन्दिग्धत्वादहेतुता ।
> हेतुत्व यावति त्वस्ति ततो नान्यत्प्रमीयते ।।"
>
> गेहाभावस्तु यश्शुद्धो विद्यमानत्ववर्जितः ।
> स मृतेष्वपि दृष्टत्वाद्बहिर्वृत्तेर्न साधकः ।। इति

— श्लोकवार्तिकम् – ५. २१.

अर्थापत्तिविषये भट्टप्रभाकरयोरय भेद. – "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते" इत्यत्र "रात्रौ भुङ्क्ते" इति शब्द. कल्पनीय इति भाट्टा आशेरते । प्राभाकरास्तु रात्रिभोजनरूपोऽर्थ एव कल्पनीय इत्यगीकुर्वन्ति ।

तत्र भाट्टाः – अर्थकल्पनापक्षे - "वृत्या पदजन्य पदार्थोपस्थितेश्शाब्दबोधे कारणत्वात् अपदार्थस्य च

---

१. " तत्सन्देहव्युदासाय कल्पना या प्रवर्तते ।
सन्देहापादकादर्थादर्थापत्तिरसो स्मृता ।।
इति शालिकनाथः । पृष्ठ २७५ (काशी हिन्दू वि० वि० स०)

शाब्दबोधे मानायोगात् श्रूयमाणवाक्यस्य तद्वाचकशब्दस्यभावाच्चेति दोषं पश्यन्ति । ततश्च यत्र श्रूयमाणस्य वाक्यस्य शब्दकल्पनायानुपपत्तिश्शाम्यति तत्र शब्द एव कल्प्यते न त्वर्थः । यत्र तु शब्दकल्पनेऽपि—अर्थकल्पनां यावदनुपपत्तिर्न शाम्यति तत्रार्थ एव कल्प्यते न शब्द इति लौकिक पथा । सर्वमिदमभिप्रेत्य भट्टपादैरुक्तम्—

"पीनो दिवा न भुङ्क्ते चेत्येवमादिवच श्रुतौ ।
रात्रिभोजनविज्ञानं श्रुतार्थापत्तिरुच्यते ॥५१॥

नचाप्यस्याः प्रमाणत्वे कश्चिद्विप्रतिपद्यते ।
भेदाभेदे विसंवादः कृतस्तत्र विनिर्णयः ॥८५॥

(श्लोक वार्त्तिकम् पृष्ठ ४६३—४७१)

इत्यादिना ।

प्राभाकरास्तु— श्रुतार्थापत्ति नागीकुर्वन्तीत्यवोचाम । तेषामयमाशय :— " पीनो देवदत्तो दिवा ने भुङ्क्ते " इत्यत्र श्रुतो दिवाभोजनाभावो रात्रिभोजनं विना पीनत्वस्यानुपपन्नत्वे सत्युमुपपद्यमानो रात्रिभोजनमेव कल्पयति, न शब्दम् । न हि शब्देन विनार्थस्यानुपपत्तिः, किन्त्वर्थेनैवेति तत्कल्पनैवोचिता । यद्युच्येत—अर्थकल्पनाय प्रवृत्तार्थापत्ति रात्रिभोजनस्वरूपस्यार्थस्य सविकल्पकज्ञानवेद्यत्वेन शब्दपूर्वकत्वप्रतीतेः शब्द एवादावुपतिष्ठते । अतश्शब्द एव कल्पनीय इति । अत्रैवं प्राभाकरा वदन्ति-सर्वत्र सविकल्पकज्ञानेषु शब्दो विशेषणतया भासते । वाचकतया शब्दोऽर्थमवच्छिनत्ति । तेन गौरिति प्रतीनो गोशब्दवाच्यो यमित्याकारकोऽर्थो गृह्यते । नह्यत्र शब्दश्शब्दवाच्यता वक्ति । तेनार्थस्याप्रतिपादकोऽस्मिन्विषये शब्दः । किन्तु वृद्धव्यवहारावगतया वाचकतया वाच्य विशिषन्नव भवति । तेन शब्दोऽर्थस्यानुपस्थापकत्वात्प्रथमभाव्यपिनानुपपत्ति शमयितुं क्षम इति नार्थापत्ति प्रमेयता गन्तुमर्हति । तेनार्थविषयैवेय, मिति ।

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय
आचार्य एवं उप कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अतिनन्दनमतिनन्दनमतिनन्दनमतिनन्दनं

श्रद्धावनम्

बुद्धदेवः,
संस्कृत विभागः
गु० कां० वि० हरिद्वार

अमृतबिन्दुतरलचारुताराकमनं
लोचनचन्द्रशीतलचन्द्रसान्द्रचन्द्रिकं
स्यन्ददाकाशगङ्गानीहारशीतलं
चन्दनहस्तपवनसंवाहननवीकृतमानसम्

श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

वनदेवतावात्सल्यसमीरितकदलीदलव्यजनं
करुणार्द्र चिन्तेन्द्रविस्तारितजलदपटलातपत्रं
मुनिजनसञ्चारदिनमुखायमानमार्गं
विवधविहगारब्धसमूहकीर्तनम्

श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनम् ।

वसुधासुधाशनस्वाहास्वरसहिताहुतिसमिद्ध-
मानाहुतहुताशनप्रकाश्यमानखण्डब्रह्माण्डाध्वरकुण्डं
विस्तृतशुष्कतृणान्तरितावनितलकुशाशयनं
तपःसिद्धिप्रभावोपगतसौधसौख्यसाधनम्
आनन्दैकपलायमानबहुलकल्पम्

श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनं श्रद्धानन्दनम् ।

ब्रह्मविद्याभ्यासकदर्थितव्यसनम्
ओंकारनादतिरोहितकलहकोलाहलं
समाधिभाषाकृतसकलमौनसम्भाषणं
कीराङ्गनाकृतसामगानम्

श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

चन्द्रशालायमानागणितपर्णशालं
कण्वायमानवटतरुवक्षःखेलत्शकुन्तलालतम्
अनिलास्थिरबालपादपमुनिकुमारं
योगाचरणनिष्कम्पैकचरणशाल्मलीतरुवरम्

श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

क्रीडापर्वतायमानदूरवर्तितैलपर्णद्रुमं
शुकायमानपत्रकुलाकुलराजवृक्षं
दौवारिकायमाणानेकदेवदारुकं
कुमारायमाणसन्नद्धकदम्बकम्

श्रद्धावनं श्रद्धावनं श्रद्धावनम् ।

भक्ति कालीन रासो काव्य
परम्परा और विकास

डॉ० विजय कुलश्रेष्ठ
हिन्दी विभाग,
पोद्दार कालिज, नवलगढ

हिन्दी साहित्य जहाँ अपनी आदिकालिक सृजनात्मक मेधा और पौरुष का मूर्त-चित्र उपस्थित करता है, वहीं भक्तिकाल की सृजनात्मक मेधा हिन्दी साहित्य एवं सांस्कृतिक चेतना की मनोवैज्ञानिक परिणति के आकलन की दिशादर्शक है। हिन्दी साहित्य के काल निर्णय मे परम्परा और काव्य रूपों तथा प्रवृत्तिगत विशेषताओ के स्तर पर विभाजन रेखा नही खींची जा सकती और पूर्व परम्पराओ का किंचित आकलित स्वरूप तद्कालीन रचनाओ में उपलब्ध हो जाता है और उसी प्रकार भावी साहित्यिक प्रवृत्तियो के विकास चिन्ह भी निवर्तमान प्रवृत्तियो मे समाहित होते दृष्टिगत होते है, यही कारण है कि विभिन्न विद्वानो ने हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन मे विभिन्न मत मतान्तरो की स्थापना की है आचार्य शुक्ल से लेकर हजारीप्रसाद द्विवेदी एव डॉ० नगेन्द्र तक काल-चिन्तन की दिशा मिलती है। आचार्य द्विवेदी के काल विभाजन के औचित्य की प्रस्तुति भक्तिकालीन विचारण के लिए अपेक्षित है, वह निम्न प्रकार है।

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन

(१) आदिकाल (१० वी—१४ वी शताब्दी)
(२) भक्तिकाल (१४ वी—१६ वी शताब्दी)
(३) रीतिकाल (१६ वी—१६ वी शताब्दी)
(४) आधुनिककाल (१६ वी उत्तरार्द्ध से अब तक)

भक्तिकाल की सीमा-रेखा एक ओर आदिकाल की प्रवृत्तियों के सक्रांत परिवेश में प्रविष्ट हुई दृष्टिगत होती हैं तो दूसरी ओर रीतिकाल की प्रवृत्तियों के मूल सस्कारो के अविकास काल मे अपने चिन्हाकित करती हैं भक्तिकाल की महत्ता सभी हिन्दी इतिहासज्ञो ने उसकी सृजनात्मक मेधा एवं सांस्कृतिक उत्थान के प्रतिमानो को गति प्रदान करने के स्तर पर स्वीकार की है। भक्तिकाल का सास्कृतिक परिवेश विभिन्न ज्ञानधाराओ, सम्प्रदायो, धार्मिक मत-मतान्तरो एवं संस्कारिताओं की भावधाराओं से सम्पन्न है, जिनमें से प्रमुख काव्य प्रवृत्यात्मक धाराएं निम्न है —

भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियां

(१) निर्गुण — (क) निर्गुण ज्ञानाश्रयी
(ख) सूफी प्रेमाश्रयी

(२) सगुण — (क) सगुण रामाश्रयी
(ख) सगुण कृष्णाश्रयी

उपर्युक्त काव्य-प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य मे हिन्दी रासो काव्य रूप के सृजनात्मक पक्ष की एक विशिष्ट-परम्परा का स्पष्ट संकेत हमे भक्ति-कालीन साहित्य-धारा में उपलब्ध होता है। यह निर्विवाद सत्य है कि रासो काव्यरूप का विकास आदिकाल में हुआ है और प्राय: अनेक वीर-गाथाओं को 'रासो' संज्ञा से अभिहित किया गया है जो मूलत: चरित्र काव्य की परम्परा में लिखे गये 'काव्यरूप' का परिणाम है। आदिकालीन चरित्रकाव्य परम्परा में हमे रासो काव्य रूप के अतिरिक्त अन्य काव्यरूप यथा रूपक, विलास, चरित, प्रकाश, चउपई, पवाडऊ आदि भी उपलब्ध होते हैं। परन्तु रासो काव्यरूप का विकास मात्र चरित्र काव्य तक ही सीमित नही रह गया। वह आदिकाल से आगे चल कर आधुनिक काल के उत्तरार्ध तक प्रचलित रहा है और विषय-परिपाक के नवीन क्षितिजो को अपना वर्ण्य-विषय बनाकर रासो काव्यरूप की व्यापक पृष्ठ-भूमि के महत्त्व को स्थापित करता है। रासो की व्युत्पत्ति के विषय मे विद्वानो मे अनेक मत है (१) परन्तु अब यह निर्विवाद रूप से स्वीकार्य मत है कि 'रासो' शब्द 'रासक' से व्युत्पन्न हुआ है (२) और यह 'रासक' शब्द सर्वप्रथम 'सनेह रासअ' या 'सन्देश रासक' मे प्रयुक्त हुआ है, प्रारम्भ मे ये रासो-काव्य मूलत. चरित्र काव्य रहे और इनके पीछे 'स्वामिन सुखाय' की भावना का प्राधान्य रहा परन्तु कालान्तर से यह काव्य रूप 'स्वान्त सुखाय' की प्रेरणा-भूमि के उत्स के रूप मे स्थिर होता चला गया है।(३)

भक्तिकाल की सीमा रेखा १४ वी विक्रम शती से आरम्भ होकर १६ वी विक्रम शती तक मान्य रही है। इस चौदहवी विक्रम शती मे जहाँ रासो काव्यरूप की स्थिति व्याप्त रही है, वही परवर्ती काल में भी अपनी विशिष्ट परम्पराओं से चरित्रकाव्य की सामान्य विशेषताओ से विकसित हुई और भक्तिकालीन लोक-भावनाओं से सम्पृक्त होकर भक्तिकालीन भावधाराओं की प्रवृत्तियों के आकलन के लिये अपने महत्वपूर्ण योग दान में सिद्ध प्रतीत होती है, रासो काव्यरूप की इस विशिष्ट प्रवृत्यात्मक विशिष्टता ने भक्तिकालीन रचनाकारो को आकृष्ट किया है और उन्होने अपने आश्रयदाताओं, आराध्यो, गुरुओ को अपनी रचनाओ का केन्द्र मानकर अपनी सम्प्रदायनिष्ठ विचार धाराओं के उल्लेख मे रासो काव्य को प्रयुक्त किया है। चौदहवी से सोलहवी शती विक्रमी तक कालक्रमानुसार रासो ग्रन्थों की सूची निम्न प्रकार है —

१४ वी विक्रम शताब्दी के रासो ग्रन्थ :—

महावीर रास	१३०७	अभय तिलक गणि
शान्त नाथ देव रास	१३१३	लक्ष्मीतिलक उपाध्याय
अन्तरंग रास	१३१६	जिनप्रभ सूरि
तार्थमाला रास	१३२३	आनंदसूरि या प्रेमसूरि
सप्तक्षेत्रि रास	१३२७	(१) जगड़ कवि (२) विजय भद्र
जिनेश्वर सूरि दीक्षा विवाह वर्णन रास	१३३१	

(१) विस्तृत अध्ययनाथ लेखक का शोध प्रबन्ध द्रस्टव्य है — पृथ्वीराज रासो का लोकतात्विक अध्ययन: प्रथम अध्याय पूर्वार्ध भाग (राजस्थान विश्वविद्यालय १९७३)

(२) उपरिवत् - उत्तरार्ध भाग

(३) उपरिवत् पृष्ठ ६२—७०

जिनेश्वर सूरि संयम श्री विवाह वर्णन रास	१३३२	सोममूर्ति
शालिभद्र रास	१३३२	राजतिलक गणि
गौतम रास	१३३३	विनयचन्द्र सूरि
बारह व्रत रास	१३३८	विनय चन्द्र सूरि
जिन चन्द्र सूरि वर्णन रास	१३४१	श्रावक लक्खमसिंह
विजयपाल रासो	१३५५	नाल्ह
गौतम स्वामी रास	१३५५	उदयदत्त
हम्मीर रासो	१३५७	शारंगधर
कच्छूली रास	१३६३	प्रज्ञतिलक सूरि
पेथड़रास	१३६३	माण्डलिक
बीसविटहमानरास	१३६८	कवि वास्तिग
समरा रास	१३७१	अम्बदेव सूरि
सघपति समरारास	१३७१	अम्बदेव सूरि
श्रावक विधि रास	१३७१	(१) गुणाकर सूरि (२) धनपाल
जिन कुल सूरि पट्टाभिषेक रास	१३७७	मुनि धर्मकलश
जिन पद्म सूरि पट्टाभिषेक रास	१३८८	सारमूर्ति
जिन दत्त सूरि पट्टाभिषेक रास	१३८९	धर्मकलश
नेमिनाथ बारहमासा रासो	...	पाल्हणु
स्थूलि भद्र रास	...	जिन पद्म सूरि
मयनरेहा रास	...	टयणु
वीसलदेव रास	...	नरपति नाल्ह
बुद्धि रास	...	जल्ह
मृगाकबेट्टा रास	...	वच्छ

१५ वीं विक्रम शताब्दी के रासो ग्रन्थ :—

क्षेत्र प्रकाश रास	१४१०	जयानंद सूरि
पंच पांडव रास	१४१०	शालिभद्र सूरि
पंच पाडव चरित रास	१४१०	शालिभद्र सूरि
कमलापति रास	१४११	विजयभद्र सूरि
कलावती रास	१४११	विजयभद्र सूरि
गौतम रास	१४१२	विनयप्रभ उपाध्याय जयसागर उपाध्याय विजय चन्द्र
गौतम स्वामी रास	१४१२	विनयप्रभ उपाध्याय
मयन रेहा रास	१४१३	हरसेवक मुनि
	१४२५	जिनप्रभ सूरि
त्रिविक्रम रास	१४१५	जिनोदय सूरि
त्रिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास	१४१५	ज्ञान कलश
गच्छनायक गुरु रास	१४२०	कन्ह कवीश्वर
शिवदत्त रास	१४२३	सिद्ध सूरि रास
हमीर रासो	१४२५	जज्जल कवि
कलिकात रास	१४२९	शालि सूरि
	१४८६	हीरानद सूरि
	१४६०	नयचन्द सूरि
कालिकाल स्वरूप रास	१४३०	हीरानन्द सूरि
कुमारपाल रास	१४३५	देवप्रभ गणि
देव सुन्दर सूरि रास	१४४५	कवि चोप
आराधना रास	१४५०	सोम सुन्दर सूरि
शालिभद्र रास	१४५५	साधु हंस
शान्तरस रास	१४५५	मुनि सुन्दर जैन
हस शालिभद्र रास	१४५५	हंस कवि [1]

(शेष आगामी अङ्क में ......)

[१] लेखक के मतानुसार हंस कवि और साधु हस दोनो एक ही व्यक्ति हैं।

कविता

कु० तृप्ति विश्वास

किसे ढूंढते मेरे लोचन ?
रहते यमुना के कछार
जाती हैं भीग भीग पलकें
किसकी स्मृति में बार बार ?

कौन चपल मुझ सोती की
कर जाता अलकें अस्त व्यस्त ?
हो जाती देख किसे मेरे
मस्तक की बिन्दी सदा त्रस्त ?

किसकी मैं नरम हथेली को
लेती स्वप्नों में चूम चूम ?
ओ सूर्यसुता ! है ज्ञात तुझे
किस पर आशान्वित यज्ञधूम ।

लौटा दे मुझे दया करके
मेरे आँचल का मृदुल हास,
फिर से बिखेर दे कलयुग के
आँगन में द्वापर का प्रकाश ।

रो रही वन्दिनी मानवता
जग की इस निर्मम कारा में,
कह, कहां छिपाया लाल मेरा ?
अपनी किस निर्मल धारा में ?

कृष्णे ! उन नन्हें हाथों का
फिर से दे दे स्पर्श मुझे ।
छलके ना अङ्क सुधी मेरी
दे दे जीवन का हर्ष मुझे ।

बैठी सूने गृहमन्दिर में
यमुने ! यह ममता रोती है ।
हर ओर मची है त्राहि त्राहि
तू किधर विमुग्धा सोती है ?

बता मुझे क्यों रुष्ट हुआ ?
मुझसे ही मेरा आत्म–रक्त,
समझी, उन कलुष कलंकों से
हो गया स्नेहिल हृदय शप्त ।

है कहाँ छुपा नादान मूढ़ ?
भर कर नयनों में वृथा नीर
निज हेतु अचिन्तित होकर ही
परहित में रहते धीर वीर ।

फिर से इन फैली बाहों में
आ लौट मेरे नन्हें किशोर ।
कब कहा जननि ने बोल सही ?
अपने बालक को त्रिया चोर ।

दे दे 'जीवन' को अभयदान
आ लौट विश्व के शान्ति दूत
हैं सभी दृष्टियां तुझी ओर
अब रूठ नही मेरे सपूत ।

कर पूर्ण वचन अब गीता का
आ गया समय, आ गया काल
ओ मातृ–शक्ति के सत्य रूप !
हो गया खण्ड भारत विशाल ।

साहित्य समीक्षा :

आँधी और चाँदनी

लेखक —

डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

प्रकाशक– नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६

१९५७; पृष्ठ १३९; मूल्य १५-०० मात्र।

डॉ० खण्डेलवाल हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं। प्रथम किरण और हिमाचला के पश्चात् आँधी और चाँदनी का प्रकाशन उनकी काव्य–निष्ठा का ज्वलन्त प्रमाण है।

कवि ने आँधी और चाँदनी को अपने 'बेटे मुनुआ (अमित)' को समर्पित किया है और दो पृष्ठो मे 'अपनी बात' कह दी है। उसने विश्वास व्यक्त किया है कि "इस कृति मे अनुभूति, विचार और अभिव्यक्ति के नाना आरोह-अवरोह और प्रयोग परीक्षण स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो सकेंगे।" यहीं पर कवि ने यह भी बताया है कि आँधी और चाँदनी शीर्षक का निर्धारण उसके सुदूर अतीत जीवन मे जिये और भोगे हुए एक ऐसे गभीर व सम्वेदनामय प्राकृतिक दृश्य व स्थिति से प्रेरित है जो उसके व्यक्ति–जीवन व युग-जीवन की अंतरंग व संश्लिष्ट मर्म-वेदना का सफल-सार्थक ढंग से वाहक व व्यजक है घोर मरुस्थल के प्रचण्ड ग्रीष्म की एक अर्द्धरात्रि के चाँदनी-धुले उद्दाम अन्धड वाले विजन के खुले आकाश के नीचे वह बचपन मे कभी सोया था। आँख खुलने पर प्रचण्ड-कोमल, कटु-मधुर प्राकृतिक दृश्य सामने था वह तब से बिम्ब बनकर वर्षों उसकी चेतना मे कही खुंसा–पड़ा कसमसाता रहा। वह अब उसके काव्य–संग्रह का विवक्षित शीर्षक बना।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह तीन भागो में विभक्त है– 'आँधी', 'मुक्तक' और 'चाँदनी'। 'आँधी' मे ५५ कवितायें ८४ पृष्ठो मे सकलित है; 'मुक्तक' संख्या में ४९ हैं; 'चांदनी' मे ३० कवितायें ४१ पृष्ठो में हैं।

'आँधी' में संकलित कवितायें मार्मिक, हृदयस्पर्शी हैं और उनके भाव व बिम्ब विषय के सर्वथा अनुरूप है। 'घोषणा' जिससे यह भाग प्रारम्भ होता है, कवि के काव्य-विषय की, अमेरिकन कवि ह्विटमन की शैली में, घोषणा करता है। 'शोक समाचार' यह बताता है कि कवि के उर्मिल साँसों भरे गीत अब नहीं रहे। इसी

तरह अन्य कवितायें भी विषय, भाषा एवं शैली की दृष्टियों से खरी उतरी है। पर इस भाग मे निम्नांकित कवितायें कुछ अत्यधिक रुचिपूर्ण लगी : 'प्यार करो! 'आकाश का निमन्त्रण'; 'कौन कभी' और 'अस्तित्व'। ये सारी कवितायें सुगेय, लयबद्ध, एवं भावनाओ से ओत-प्रोत हैं। अन्य अधिकाश कवितायें छन्दमुक्त हैं; उनमें नवीनता, आधुनिकता एवं प्रगतिवादी परीक्षण की झंकार है। एक विशेष बात इन कविताओं की है अमिट वैयक्तिक छाप। 'आधी' में कवि ने प्रकारान्तर से अपनी काव्य-रचना के बारे मे भी अनेक स्थलो पर प्रकाश डाला है : उदाहरणार्थ :-

बहने दो आज के कवि की चेतना—
आक्रोश, विद्रोह, फुंकार व भुंझलाहटो–भरी।
'यह लो मेरे हस्ताक्षर', पृष्ठ २७

और

जीवन लूंगा मैं तो आंधी, नदी या तूफान–सा,
जिसमे तडपन हो, ज्वाला हो, गुंजन, मेघ-मलार हो।
'जीवन : तीन स्थितियाँ', पृष्ठ २६

बीच बीच मे कही–कही लोक गीतो तथा संस्कृत सूक्तियो का सुन्दर उद्धरण पेश किया गया है, जैसे-

(१) 'श्यामा का नख–दान मनोहर...' (पृष्ठ १४)

(२) 'आंखो ही आंखो मे इशारा हो गया।'
(पृष्ठ २१)

(३) 'मुहुर्त ज्वलित श्रेयो न च धूमायित चिरम्'
(पृष्ठ ६०)

इस तरह के उद्धरण विविध प्रकार के सुमधुर व्यंजनों मे चटनी का काम करते है।

'मुक्तक' दो, तीन, चार और पाच लाइनों के है। इनमे से कुछ भावप्रधान तथा कुछ विचार-प्रधान हैं। पाठको के मनोरंजन के लिये एक मुक्तक यहां उद्धृत है :—

कागजी इस फूल मे मकरन्द लाओ,
जिंदगी के गद्य मे कुछ छन्द लाओ,
भेज कर सब वायु–यानो को गगन में—
भूमि पर सब स्वर्ग का आनन्द लाओ।
(पृष्ठ ६५)

'चाँदनी' मे संकलित अधिकतर कवितायें गीत है। गीतो के प्रति सहज आकर्षण होने के नाते मै 'चांदनी' को पुस्तक का सर्वोत्तम भाग मानता हू। इन गीतों मे माधुर्य, प्रवाह, चन्दा की शीतलता सब कुछ है। इनमे वह लय, स्वर एवं रस है जो सहज ही सम्वेदनशील प्राणियों की हृद्-तन्त्री को झंकृत कर दे। मन को मुग्ध कर देने वाले कुछ गीतो के शीर्षक यो हैं- 'मुझको एकाकी गाने दो', '(मैंने) गीत-प्रदीप जलाएं', 'हम तुम कही चल दे', 'गीत: दूर–बड़ी दूर–', 'गीतः तुमने ने अभी देखा जीवन', 'गीत : सुकुमारि, उठाओ अवगुंठन', 'गीत : याद न कर मन, प्रीत पुरानी', 'गीत : सबका अपना अपना मन है', 'लो, कवि का मन खोल दिखाऊं', 'मेरे गीत मौन मत होना' इत्यादि। आखिरी कविता को पढ कर लगा कि मैं आनन्द के सातवें आसमान पर पहुंच गया हू। इस कविता का कुछ अश यहाँ उद्धृत है :-

मेरे गीत मौन मत होना!

चिर दरिद्र सा जीवन—पथ पर,
भटकूं जब ले काया जर्जर,
तब तुम आ उर की प्राची से, बरसाना ऊषा का सोना!
हों रस-हीन दिशायें सारी,
उजड चले जीवन—फुलवारी,
तब तुम बरस जलद से रिमझिम, मधु से मेरे प्राण
भिगोना !
······ (पृष्ठ १३९)

पुस्तक का समापन अत्यन्त प्रभावपूर्ण व रोचक है।

अन्त में यही कहना है कि आंधी और चांदनी जैसे सृजनात्मक, परीक्षणात्मक एवं कलात्मक काव्य-सग्रह कम ही हाथ लगते हैं। इसमे कवि ने अपने जीवन के कटुतम तथा मधुरतम अनुभवों को भली-भाँति सजोया है। यहां उसकी काव्य-चेतना आधुनिकता के कगार पर खड़ी होकर हुँकार भर रही है। काव्य, कला, अभिव्यक्ति, लय, रस, प्रयोग-परीक्षण, समसामयिकता, सांस्कृतिक सूझ-बूझ, मानवीय मूल्यों की पहचान : सभी दृष्टियों से यह काव्य-सग्रह वस्तुतः अभिनन्दनीय है। प्रबुद्ध कवि डॉ० खण्डेलवाल इस स्तुत्य प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं।

समीक्षक —
डॉ० अमर नाथ द्विवेदी

जीवन-पथ पर चलने वालो

जीवन-पथ पर चलने वालो, मन का मन सन्तुलन बिगाड़ो ।
आज अगर प्रतिकूल है कोई, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ॥

आंधी और तूफान सदा ही,
आते और जाते रहते है ।
पतन और उत्थान सदा ही,
हमको खुद परखा करते है ।
आज अगर प्रतिकूल समय है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

सुख 'औ' दुःख की राम कहानी,
आदि कालसे चलती आयी ।
आशा की स्वर्णिम बातें भी,
आदि काल से छलती आयीं ।
आज अगर छल रहा तुम्हे है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

संघर्षों बलिदानों से ही,
सदा मार्ग विस्तीर्ण हुऐ है ।
जो सहते दुःख 'औ' दर्दों को,
वे जन ही उत्तीर्ण हुए हैं ।
आज अग प्रतिबंधित जीवन, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना हथकढ़ी 'औ' बेड़ी में,

बंधा आज मानव का स्वर है ।
माना गीतों की कड़ियों में,
सिसक रहा अब भाव प्रखर है ।
आज अगर शंकित हर क्षण है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना जीवन की गलियों में,
आज हँसी कम, रूदन अधिक है ।
माना बगिया के फूलों में,
आज खुशी कम, घुटन अधिक है ।
आज अगर दुःख औ' मातम है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना पथ के चौराहे पर,
आज कपट औ' झूठ बिक रहा ।
माना चांदी की झिलमिल में,
आज किसी का मान बिक रहा ।
आज अगर धूमिल जीवन है, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

माना सुन–सुन कर दुष्टों की,
कपट-पूर्ण बातें कुछ जग मे ।
माना अपने रूठ गये हैं,
छोड़ चले एकाकी मग में ।
आज 'नीर' प्रतिकूल है कोई, कल अनुकूल तुम्हारे होगा ।

महावीर 'नीर' विद्यालंकार

गो आलम्भन

लेo स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक

नवीन याज्ञिक यज्ञ में अष्टापदी (आठ पैर वाली अर्थात् चार पाद निज के और चार गर्भगत वत्स 'बछडा–बछडी' के) का आलम्भन–हिंसन–वध मानते और करते हैं। ऐसा मानना और करना अवैदिक है-वेदविरुद्ध है। कारण-कि वेद में गौ को चाहे चतुष्पदी हो चाहे अष्टापदी हो, अघ्न्या कहा गया है "अद्धितृण-मघ्न्ये" (ऋ० १/१६४/४०)। इस पर निरुक्तकार यास्क ने लिखा है "अघ्न्याऽहन्तव्या भवति" (निरु० अध्याय ११/ ख० ४५)।

आलम्भन शब्द का अर्थ प्राचीन वैदिक साहित्य मे हिंसा-वध करना नही है। इसके लिए निम्न प्रमाण देखें :—

" आलभन्ते " (ऐ० ब्रा० ३/१६), इस पर सायण का भाष्य है, "आलभन्ते–स्पृशन्ति" (सायण)। सायण ने आलम्भन का अर्थ स्पर्श करना लिखा है हिंसा करना नही। सायण कोई आर्य समाजी नही था। "वत्समालभते" – (का० ७/७) । इस पर ब्राह्मणोद्धार कोष मे अर्थ दिया है 'स्पृशति' अर्थात् बच्चे को स्पर्श करना - प्यार करना। सभी मानव बच्चे को प्यार करते अर्थात् छाती से लगाते और चूमते है। मानवेतर गौ आदि प्राणी चूमते और चाटते हुए तो देखे जाते हैं तथा 'लभ्' धातु (लभ् प्राप्तौ) प्राप्ति अर्थ में है। 'आ' उपसर्ग समन्तात्- 'सब प्रकार से' अर्थ मे आता है। किसी मित्र के घर जब मिल आता है तो हाथ मे हाथ पकड़ कर स्वागत करते हैं प्राप्त करते हैं और जब 'आ' उपसर्ग लगकर आलम्भन हो जाता है तो छाती से लगा कर आलिंगन करते हैं यह आलम्भन आलिंगन हो जाता है। "मात्रा, पित्रा, भ्रात्रा, सख्या - आलभते" (मै० ३/६/६)। माता के साथ, पिता के साथ, भ्राता के साथ, मित्र के साथ अपने को आलिंगित करता है – इनसे अपना आलिंगन करता है।

'लभ्' धातु को शप् और लिट् से भिन्न अजादि प्रत्यय परे होने पर नुम् का आगम होता है। शप् में लभते, आलभते और लिट् में लेभे और आलेभे होता है।☐ 'उपात् प्रशंसायाम् (अष्टा० ७/१/६६)' उप उपसर्ग से परे प्रशंसा अर्थ में 'य' प्रत्यय परे होने पर लभ् धातु को नुम् आगम होता है। जैसे 'उपलम्भ्यं विद्याधनम्' (विद्याधन प्रशंसनीय है) 'आडे । यि' अष्टा० ७/१/६५' आङ् उपसर्ग पूर्वक लभ् धातु को नुम् का आगम होता है 'य' प्रत्यय परे होने पर जैसे– 'आलम्भ्या' प्रयोग बनता है। महाभाष्य मे इसका उदाहरण है "आलम्भ्य गौ" यहां पाणिनि सूत्रकार ने

☐ रभेरशब्लिटो:, लभेश्च — अष्टा० ७/१/६३-६४

'हिंसायाम्' शब्द नही लिखा है, इसलिए उपर्युक्त प्रमाणो के अनुसार स्पर्श करने योग्य प्यार या आलिंगन करने योग्य गौ होती है। भैंस, बकरी, भेड स्पर्श करने योग्य या आलिंगन करने योग्य नही होती। वह गौ के समान आकर्षक नही, इसलिए आलम्भन, आलम्भक, आलम्भी, साधु-आलम्भी, आलम्भयति - इन शब्दो का अर्थ हिंसापरक नही है किन्तु स्पर्श, आलिंगन करने के अर्थ मे है।

यज्ञ मे यजमान द्वारा पुरोहित को गो दान दी जाती है हाथ से स्पर्श करके प्यार करके। पुरोहित भी इस दान को हाथ से स्पर्श करके, प्यार करके स्वीकार करता है। कन्यादान वर को दिया जाता है पिता द्वारा। वह हाथ से कन्या को प्यार करता है और आश्वासन देता है "मै तुझे इच्छा पूर्वक वर के लिए देता हू, चिन्ता नही करना, वह तुझको बलात् नही ले जा रहा है।" ऐसे ही यजमान गौ का स्पर्श करता है, प्यार करता है "मैं इच्छा पूर्वक तुझे पुरोहित को दान देता हू, वह तुझे बलात् नही ले जा रहा है।" लेते समय गौ को पुरोहित स्पर्श करता है, प्यार करता है। अब प्रश्न यह है अष्टापदी अर्थात् सगर्भा गौ को दान क्यो देता है, दूध देती हुई को दे। यह उच्छिष्ट दान है जैसे किसी घर आए अतिथि को भोजन खिलाना है अपने आप पहले खा कर के। अतिथि को पहले खिलाना चाहिए – 'अग्रे भोजयेदतिथीन्'। इसलिए सगर्भा गौ को दान देना चाहिए। जब सगर्भा गौ पुरोहित को दी जायगी, वह उसकी सेवा करेगा और गौ भी उससे प्रेम करेगी और रुचि से दूध देगी तथा पुरोहित उसको अपने अनुकूल उसको घास, चारा, दाना आदि शुद्ध एवं सात्विक देगा शुद्ध एवं सात्विक दूध प्राप्त करने के लिये। साथ ही अन्तिम गर्भ वाली बूढ़ा गौ को दान नही देना वरन् प्रथम गर्भा गौ को दान देना सात्विक दान है जो विवाह के प्रसंग मे देना चाहिए जैसे राजा दशरथ ने राम के विवाह-प्रसग में गौ दान दिया था "स्वस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते गमिष्यामः स्वालयम्। श्राद्धकर्माणि करिष्ये—इति चाब्रवीत्, स गत्वा निलय राजा श्राद्धं कृत्वा विधानतः प्रभाते काल्यमुत्थाय चक्रे गोदानमुत्तमम्।" (बा० रामायण मे) अर्थात् राम का विवाह हो जाने पर दशरथ जनक को कहते है कि आप कल्याण को प्राप्त करे, अब हम अपने घर को जायंगे, वहाँ श्राद्धकर्म (ब्रह्मभोजादि) करेगे। दशरथ ने घर पहुच कर ब्रह्मभोज दे दिया और प्रभात काल मे उठ कर उत्तम काल प्राप्त गोदान कर दिया (सगर्भा गोदान किया)। अब यह गोदान किसी विद्वान-पुरोहित आदि को दिया आशीर्वाद के लिए जैसे गौ प्रथम गर्भ वाली दी जाती है ऐसे ही नवीन पुत्रवधू सगर्भा हो जाय।

(२) विद्वानो की दृष्टि में गौ का आलम्भन (आलिङ्गन) :—

विद्वानो की दृष्टि मे अष्टापदी गौ है वाक्—'गौः-वाङ् नाम' (निघ०)। चार उसके मुख्य पाद है 'नामाख्याते उपसर्ग निपाताश्च' (निरु० १/१/१), नाम आख्यात, उपसर्ग और निपात है तथा इसके आन्तरिक पाद सुप् कृत्, तद्धित और समास (समासान्त) प्रत्यय हैं। इस प्रकार वाणी रूप गौ अष्टापदी हुई। इसका आलम्भन (आलिंगन) विद्वान लोग करते हैं। "उत त्व. पश्यन् न ददर्शनाम्, उत त्व' श्रृण्वन् न श्रृणोत्ये-

नाम् उत त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः'' (ऋ० १०/७१/४) अर्थात् इस वाणी रूप गौ को कोई एक देखता हुआ भी नही देखता है लिपि रूप में आई हुई को, कोई एक इसको सुनता हुआ भी नहीं सुनता है, परन्तु किसी एक (विद्वान) के लिए यह वाणी रूप गौ अपने शरीर को खोल देती है (अपने अर्थ को खोल देती है। उक्त वाक् वेद वाक् है। ''स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम्, आयु. प्राणं प्रजा पशु कीर्ति द्रविणं ब्रह्म– वर्चसं मह्यं दत्वा व्रजतब्रह्मलोकम्'' (अथर्व० का १६ /) इस प्रकार वेद वाक् रूपी गौ से आयु, प्राण, प्रजा, पशु कीर्ति, धन ब्रह्मतेज तथा मोक्ष प्राप्त होते है।

(३) योगियों की दृष्टि में उत्कृष्ट वाक् 'ओ३म्' अष्टापदी गौ का आलम्भन (आलिङ्गन)

योगियो की दृष्टि मे उत्कृष्ट वाक् ओ३म् गौ है। 'तस्य वाचक. प्रणव.' (योग० १/२७) उस ईश्वर का वाचक ओ३म् है। ''तज्जपस्तदर्थभावनम्'' (योग० ७/४२८) । उस ओ३म् का जप और उसका अर्थ भावन– स्वरूप का अपने अन्दर धारण करना है। ओ३म् के स्वरूप का वर्णन माण्डूक्योपनिषद् मे आता है वह उसके चार पादो के अन्दर दिखलाया गया है। जागरित स्थान, स्वप्न स्थान, सुषुप्त स्थान, तुरीय स्थान, ये चार पाद दृष्ट है तथा ये ओ३म् की अ, उ, म्, इति (विराम) इन मात्राओं में क्रमश; आते हैं। इनकी उपासना से चार फल होते हैं, वे आन्तरिक पाद हैं जो कि जागरित स्थान 'अ' का सारी कामनाओं को प्राप्त कर लेना, स्वप्न स्थान 'उ' का ज्ञान सन्तति का उत्कर्ष करना, सुषुप्त स्थान 'म्' का सब के मूल को लक्षित कर लेना, तुरीय स्थान आत्म स्वरूप 'इति' (विराम) का आत्मा का परमात्मा मे संविष्ट होना है। इस प्रकार वाक् ओ३म् अष्टापदी गौ हुई। इसका आलिंगन योगी लोग करते हैं जैसा कहा गया है आत्मा का परमात्मा मे सविष्ट होना।

(४) मुक्तात्माओं की दृष्टि में मुक्ति रूप अष्टापदी गौ का आलम्भन (आलिङ्गन) :

मुक्तात्माओ की दृष्टि मे मुक्ति अष्टापदी गौ है। ''गौः पदनाम'' (निघ० ५/५)। मुक्ति में अष्ट सुख- पद–प्राप्ति होती है इससे मुक्ति अष्टापदी हुई। ऋग्वेद में नवम मण्डल के ११३ वे सूक्त मे अष्ट सुख पदो का २ मन्त्रों मे वर्णन है '' यत्र कामा निकामाश्च ...... यत्र स्वधा च तृप्तिश्च ......'' १० वाँ मन्त्र, 'यत्रा- नन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ...... तत्र मामृत कृधीन्द्राय इन्दो परिस्रव'' ११ वाँ मन्त्र। काम निकाम स्वधा और तृप्ति ये चार सुखपद पीछे और आगे के पद हैं, आनन्द, मोद, मुद, प्रमुद ये चार सुखपद इनके मध्य मे है और इस प्रकार यह मुक्ति रूप गौ अष्टापदी हुई। इसका आलम्भन आलिंगन मुक्तात्माए करती है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि ''श्रृण्वन् श्रोतं भवति मन्वानो मनोभवति'' ( ) मुक्ति मे सुनना चाहता है तो कान हो जाता है, मनन करना चाहता है तो मन हो जाता है ''यं यं कामं कामयते सोऽस्य सङ्कल्पादेव समुत्तिष्ठते''– ( ) ''सोऽश्नुते सर्वान् कामान् स ब्रह्मणा विपश्चिता''।

इति।

श्रीकृष्ण समयोगी बनो

भाद्रपद की अष्टमी समुदित मनाई जायगी,
जन्म से भगवान् तक झांकी दिखाई जायगी।
कृष्ण-माखन चोर था यह भी बताया जायेगा,
गोपियों में रत बिहारी को नचाया जायेगा ॥१॥

कीर्तनों में एक ध्वनि बाजे बजाये जायेगें,
मग्न हो सह गान के करतल बजाये जायेगें।
गोपाल गिरधर बोलके मोहन बुलाये जायेगें,
भोग भी नैवेद्य से बहु विध लगाये जायेगें ॥२॥

ओ ! कृष्ण पूजक भक्तजन, क्या कृष्ण महिमा है यही,
क्या कभी सद्बुद्धि से तुमने विचारा है सही।
चोर था भगवान् भी था, ग्राह्य गरिमा क्या रही,
सोचे बिना आरोप निन्दित नित लगाये है वही ॥३॥

गोपाल बन गोपालने की श्रेष्ठ शिक्षा दे गया
राष्ट्ररक्षा गौ बिना सम्भव नही, बल दे गया।
आदर्श यदि पाला नहीं तो कृष्ण पूजन क्या किया,
आदर्श यदि पाला नहीं तो भक्त बनके क्या किया ॥४॥

गोदुग्ध, घी मक्खन सदा ही कृष्ण ने सेवन किया,
बल बढ़ाकर युक्ति से ही राक्षसों का वध किया ।
चाय, कहवा पान करके पेय मादक साथ में,
दुष्ट घातक क्या बनोगे शक्ति नहीं जब गात में ॥५॥

कृष्ण योगेश्वर बनें सब ऋद्धि-सिद्धि प्राप्तकर,
नीतिवक्ता युद्धवेत्ता, आप्त बुद्धि प्राप्तकर ।
शास्त्रवेत्ता, नीतिज्ञाता योग साधक है नहीं,
पेट पालक मात्र हैं वे कृष्ण पूजक है नहीं ॥६॥

गौ पालके, घी दूध पीकर शक्तिशाली तुम बनों,
आर्षविद्या शास्त्र पढ़के बुद्धिशाली सब बनो ।
गुण प्राप्ति में पुरुषार्थी बन, यह व्यर्थ पूजन त्याग दो,
श्रीकृष्ण समयोगी बनो, निज हेय दुर्गुण त्याग दो ॥७॥

योगेन्द्र पुरुषार्थी
योगधाम, ज्वालापुर

संक्षिप्त जीवन परिचय-

विश्वविद्यालय के नये कुलपति
डॉ० गंगाराम जी

डॉ० गंगाराम जी ने आंग्लभाषा उपाध्याय के रूप मे सन् १९५२ मे कार्यभार ग्रहण किया। १९६६ में उन्हें विश्वविद्यालय का कुलसचिव नियुक्त किया गया। २८ अगस्त, १९७६ से वे विश्व-विद्यालय के कुलपति पद पर नियुक्त हुए हैं।

डॉ० गंगाराम जी पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य मे पी-एच० डी० है। साहित्यिक जगत उनकी कृतियो से ऋणी है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित "संक्षिप्त ऑक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचायक" ग्रंथ उनकी मौलिकता का कीर्तिस्तम्भ है। "विश्व सभ्यता का इतिहास" स्वेन महोदय के अंग्रेजी ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर है। भारत की सम्पूर्ण प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं के साहित्यकारो और 'भारतीय साहित्य का विश्वकोष' एवं 'भारतीय माइथोलॉजी का विश्वकोष' नामक ग्रंथो पर आपकी लेखनी दस वर्षो से सतत प्रयत्नशील है। इनकी एक रचना अर्थशास्त्र पर भी प्रकाशित है। अंग्रेजी, हिन्दी एवं उर्दू मे भी अन्यान्य पत्र-पत्रिकाओ मे आपके लेख निकलते रहते

डॉ० गंगाराम का जन्म सन् १९२४ मे ग्राम कोहड, जिला करनाल, (हरियाणा) में हुआ, जहाँ आपके माता-पिता कृषि-कार्य करते हैं। डॉ० गंगाराम ने अपने पुत्रो की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल में ही दी। जाँति-पाँति तोड़ कर अपने पुत्रो के विवाह किये। अपनी पुत्रियो के विवाह पंजाब और हिमाचल प्रदेश मे किये। वर्षो तक आप गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाज के मंत्री रहे।

नवनियुक्त उपकुलपति एवं आचार्य

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय

उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में गोमती नदी के किनारे स्थित सुलतानपुर जनपद के छोटे से गाव मे १ जुलाई १९४३ मे जन्म । शिक्षा-दीक्षा शस्य श्यामला भूमि पश्चिमी बगाल में । कलकत्ता विश्वविद्यालय से सस्कृत में प्रथम श्रेणी मे एम० ए० परीक्षा, १९६२ । तदुपरान्त शोध-कार्य हेतु विश्वविद्यालीय शोध - छात्रवृत्ति - राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत ब्रह्मश्री पट्टाभिराम शास्त्री एवं डॉ० गोरीनाथ शास्त्री के चरणों मे बैठ कर विद्याध्ययन । 'स्वतः प्रामाण्यवाद' पर शोध प्रबन्ध लिखकर कलकत्ता विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधि, १९६७ । १९६७ मे वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में परीक्षाधिकारी पद पर नियुक्ति । तदुपरान्त ढाई वर्षों तक इसी विश्वविद्यालय के कुलसचिव पद पर कार्य । १९७० मे कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर शोध प्रबन्ध लिख कर डी० लिट्० उपाधि सस्कृत विश्वविद्यालय से प्राप्त की ।

सितम्बर, १९७० से दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग मे अध्यापन । तीन पुस्तकें प्रकाशित । विभिन्न पत्रिकाओं मे लगभग एक दर्जन शोध निबन्ध । निर्देशन में ५ छात्र पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर चुके हे । लगभग १० शोधार्थी विभिन्न विषयो पर शोध-कार्यरत हैं ।

प्रकाश्यमान ग्रन्थ :—

(१) मीमासा दर्शन का उद्भव एवं विकास ।

(२) कुमारिल भट्ट एंड हिज क्रिटिक्स ।

नवनियुक्त कुलसचिव
श्री बलजीत सिंह जी आर्य

धरित्री का इतिहास इस बात का साक्षी है कि बल जिसके पास है, जीत उसी का वरण करती आई है। बल और जीत का यह शाश्वत संबंध अनादिकाल से अनवरत रूप से चलता आया है। बल और जीत के समन्वय की परिभाषा हैं हमारे श्रद्धेय श्री बलजीत सिंह जी आर्य। आपके जीवन का संक्षिप्त दिग्दर्शन इस प्रकार है।

जन्म व जन्म स्थान :-

१० मई, १९४१ को दिल्ली के प्रसिद्ध कस्बा नरेला मे आपने जन्म लेकर एक किसान परिवार को धन्य किया। आपके पिताजी का नाम था श्री महासिंह जी और माता जी का नाम श्रीमती भगवन्ती देवी। परिवार ने पिछले कई पीढ़ियो से अपनी अथक अतिथि सेवा-भावना तथा वचन-बद्धता के कारण सारे क्षेत्र में मान व प्रतिष्ठा का एक ऊचा स्थान बना लिया है। आपकी ममतामयी माता अत्यन्त धर्मपरायणा नारी थी। आपकी अधिकांश धार्मिक भावना माता जी की ही देन है।

आर्य समाज में प्रवेश :-

वैसे तो दिल्ली व हरियाणा के किसान जन्म से ही आर्य समाजी होते है किन्तु नरेला तो आर्य समाज में भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम का मेरठ है। इसीलिये श्री आर्य जी आर्य समाज का अमृत प्रसाद लेने में क्यो चूकते! बचपन से ही आर्य समाज ने आपको वैदिक रंग में रग दिया।

शिक्षा :-

आपने प० उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध किसानो की सस्था जं० वैदिक कालेज बडौत (मेरठ) में स्नातकीय परीक्षा कृषि से उत्तीर्ण करके एशिया के सबसे प्रसिद्ध कृषि संस्थान भारतीय कृषि अनुसधान सस्थान नई दिल्ली से एम एस-सी. कृषि परीक्षा उत्तीर्ण की।

अध्यापन एवं साहित्य सृजन :–

१९६४ से बी० एस-सी० तथा एम० एस-सी० कृषि कक्षाओ को जिस योग्यता, कुशलता तथा स्नेह के साथ पढाया है, वह कॉलेज के छात्रो और बडौत क्षेत्र के साथ जनमानस मे व्याप्त लोकप्रियता का एक आधार स्तम्भ है। एक आदर्श गुरु के रूप मे जैसा सम्मान श्री आर्य जी को जं० वैं० कॉलेज बडौत तथा बडौत के निकटवर्ती क्षेत्र में मिला है ऐसा सम्मान बिरले अध्यापको को ही मिल पाता है। संस्था में निर्धन एव पिछडी जाति के विद्यार्थियो की सेवा तो मानो उनका धर्म ही बन गया था। आदर्श गुरु और आदर्श मानव के समन्वित व्यक्तित्व से प्रभावित होकर

ही आपके कई छात्रो ने तो सारा जीवन ही आर्य-समाज के कार्य के लिये दान दे दिया है। यह आपके व्यक्तित्व के चुम्बकीय आकर्षण का ही परिणाम है -

श्री आर्य जी ने अध्यापकों और विद्यार्थियो की कठिनाइयो को दूर करने के लिये कृषि विज्ञान की तीन मौलिक पुस्तकों का प्रणयन किया है, जिनके नाम है (१) ग्रामीण समाज शास्त्र (२) कृषि प्रसार (३) कृषि प्रसार का सरल अध्ययन। कई एक धार्मिक पुस्तको पर आपने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका तथा अनेक पर अपनी समालोचनात्मक सम्मतिया लिखी है -

सामाजिक कार्य क्षेत्र में :—

आपने अपनी माता जी के दूध और जीवन घूंटी को लिया ही इसलिये था ताकि समाज का कोई काम कर सके। १६५७ में जब हिन्दी रक्षा आन्दोलन चल रहा था तब छोटी आयु होने पर भी सत्याग्रह के लिये धन एकत्रित करना तथा बडो को जेल जाने के लिये प्रेरित करना आपके दैनिक जीवन का अग बन चुका था। गौ-रक्षा आन्दोलन मे भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। १६६७ से १६६६ तक आपने सार्व-देशिक आर्य युवक परिषद के महामंत्री के रूप में बडे धैर्य, साहस और अध्यवसाय से काम किया और आय युवको का एक सशक्त संगठन बन गया। सैकडो नई आर्य युवक परिषदे दिल्ली, हरियाणा तथा प० उत्तर प्रदेश में गठित की गई। युवको की दुधर्ष-शक्ति को सही दिशा देने के लिये विशाल स्तर पर कई ब्रह्मचर्य शिक्षण –शिविरो का आयोजन किया गया। युवको मे नेतृत्व भावना विकसित करने के लिए सामूहिक वार्ता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, लेख-प्रतियोगिता, सर्वोत्तम स्वास्थ्य-प्रतियोगिता आदि कार्य-क्रम तो आपकी दिन चर्या मे आ गये थे।

मद्य-निषेध सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन विशेष रूप मे आपने करवाये है। नशा विरोधी समिति की, स्थापना कर, जगह-जगह प्रचार कर, पोस्टर लगवाना आदि काम आपने बड़ी लगन से करवाये है।

तप, सरलता एवं स्वदेश प्रेम :—

आपने बचपन से लेकर आज तक खादी कुर्ता - धोती धारण कर भारतीय आदर्श का मूर्तिमान स्थापित किया है। एक घटना आपके जीवन की विशेष प्रसिद्ध है जब आप भारतीय कृषि अनुसधान सस्थान नई दिल्ली मे अध्ययन करते थे तो सस्थान के प्रोफेसरों ने आपको अग्रेजी परिवेश मे आने के लिये कहा। कक्षा से बाहर कर दिया गया धमकियां दी जाने लगी। पर वाह रे भारतीय सभ्यता के पुजारी। झुकना पडा आपके सामने सस्थान के उन नराधमो को। सम्पन्न होते हुए भी कभी आज तक बाजारू वस्तुओं का प्रयोग न किया। आपने कभी निर्धन को तुच्छ व हीन न समझा।

यहां से पूर्व :-

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलसचिव पद को सुशोभित करने से पूर्व आप आर० के० आर्य कालेज नवाशहर, जालन्धर मे प्रिंसिपल पद पर पिछले दो वर्षों से कार्यरत थे वहां भाषा, वेशभूषा की विभिन्नता होते हुए भी सस्था के प्रशासन को जिस योग्यता एव वरीयता से संभाला है वह उस सस्था के इतिहास मे एक अभूतपूर्व घटना है। पिछले १५ वर्षों में इस संस्था मे १०–१२ प्रिंसिपल आये और अपमान के साथ उनको कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

लेकिन कॉलेज के इतिहास में पहली बार श्री आर्य जी की ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सरल स्वभाव, संस्कृति प्रेम एवं समभाव के कारण उनको कॉलेज की प्रबन्ध-समिति, कॉलेज के प्रोफेसरो, तृतीय एव चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की ओर से भावभीनी विदाई दी गयी।

ऐसे कुलसचिव को पाकर क्या यह स्वामी श्रद्धानन्द का उजड़ा चमन फिर हरा न हो जायेगा ? क्या अपनी पुरानी गरिमा और महिमा को यह विश्व-विद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय रूप में प्राप्त न करेगा ? हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री आर्य जी के नेतृत्व में चल कर यह विश्वविद्यालय अपनी चरम सीमा और चरम लक्ष्य तक अवश्य पहुँच जायेगा। प्रभु करें आप दीर्घायु स्वस्थ्य हों ताकि शिक्षा जगत आपकी सेवाओं का पूर्ण लाभ प्राप्त कर सके।

नवनियुक्त उपकुलसचिव
डॉ० काश्मीर 'राही'

आपका जन्म ४, अप्रैल, १६४६ को निर्मल बाग, कनखल, हरिद्वार मे हुआ। बी. ए कक्षा का अध्ययन एस० एम० जे० एन० महाविद्यालय मे किया। एम० ए० एवं पी–एच० डी० की उपाधि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से प्राप्त की।

सितम्बर, १६७२–७५ तक एस० एम० जे० एन० महाविद्यालय, हरिद्वार मे इतिहास के प्रवक्ता रहे। सितम्बर '७५ से जून '७६ तक संत निरंकारी लोकप्रिय कॉलेज सोहना, गुडगांव मे इतिहास विभाग के अध्यक्ष रहे।

वर्तमान समय मे आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के उप कुलसचिव पद पर कार्यरत है।

सहायक मुख्याधिष्ठाता

शिवचरण विद्यालंकार

जन्म – ७ जुलाई १९३५

स्थान – हनुमानगढी, कनखल, जि० सहारनपुर।

शिक्षा – पन्नालाल भल्ला कॉलिज से इण्टर तक प्रारम्भिक शिक्षा, साहित्य-रत्न, विद्यालंकार, एम० ए०, अब शोध-छात्र।

राजनीतिक गतिविधि – युवक कांग्रेस के अध्ययन मच का सयोजक, क्षेत्रीय कांग्रेस कमेटी कनखल का मंत्री, १९७१ मे नगर पालिका सदस्य, नगर पालिका शिक्षा-समिति का चेयरमैन, पचपुरी की प्रारम्भिक शिक्षा की अध्यापक-समिति का अध्यक्ष, राज्य विद्युत कर्मचारी परिषद् नगरपालिका-समिति का अध्यक्ष, कञ्ज्यूमर्स कोआपरेटिव सोसाइटी का डायरेक्टर।

साहित्यिक – अतिथि त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादक,
गुरुकुल पत्रिका का भू० पू० प्रबन्ध सम्पादक,
सा० हिन्दुस्तान, शाकम्भरी, वीर अर्जुन, कहानीकार (वाराणसी) साथी, कीर्ति, हिन्दू, अरुण (मुरादाबाद), युवक (आगरा), रेखा (नागपुर) आदि पत्र-पत्रिकाओ मे लगभग दो दर्जन कहानी प्रकाशित।
सवाददाता– दैनिक 'मयराष्ट्र' मेरठ।
१५ जुलाई, ७६ से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर कार्यरत है। इससे पूर्व लगभग १४ वर्ष से विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागो मे अनेक पदो पर कार्य करके अपूर्व योगदान दिया।

–रामाश्रय मिश्र
सम्पादक

संरक्षक सभा का प्रस्ताव

दिनाङ्क	उपस्थिति	उपस्थितों के हस्ताक्षर
५-६-७६	१— श्री बाबूराम जी आर्य, प्रधान	ह० बाबू राम आर्य
	२— श्री अतरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष	ह० अतरसिंह
	३— ओमप्रकाश द्विवेदी, सदस्य	ह० ओमप्रकाश द्विवेदी
	४— भजनदास जी जागीदार, सदस्य	ह० भजनदास जागीदार

कार्यवाही :—

आज दिनांक ५-६-७६ को संरक्षक सभा गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग की अन्तरंग की बैठक दिन के ३ बजे स्थान- सीनेट हाल मे श्री बाबूराम जी आर्य प्रधान की अध्यक्षता मे हुई।

कुल सख्या — सदस्य — १२
कोरम — ४
उपस्थिति — ४

प्रस्ताव नं० ३—

श्री भजनदास जी जागीदार निवासी थाना शिमला ने प्रस्ताव रखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने जब से इस गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति पद ग्रहण किया है तब से गुरुकुल अमर हुतात्मा स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा दिखाये गये मार्ग पर तीव्र गति से बढ चला है। हम सब को एक आशातीत सफलता दिखाई पड रही है जिसकी कि हम इतने थोड़े समय से कल्पना भी नही कर सकते थे। किन्तु जहाँ यह प्रसन्नता है वहाँ एक दुःख का विषय भी है कि कुछ अवाञ्छनीय तत्वों ने स्वामी जी की सरलता का लाभ उठा कर गुरुकुल के आय का श्रोत फार्मेसी पर जबरदस्ती कब्जा जमा रखा है और फार्मेसी से मिलने वाली गुरुकुल को मासिक सहायता नही दी जा रही है।

अत· यह सरक्षक सभा भारत सरकार से यह अपेक्षा करती है कि भारत सरकार अविलम्ब फार्मेसी को विश्वविद्यालय कागडी के अधिकार में दिला दे जिससे भविष्य मे आने वाला आर्थिक संकट इस फलती-फूलती संस्था को न मुर्झा सके।

श्री ओमप्रकाश द्विवेदी निवासी जिला बहराइच ने उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया तथा प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत किया गया।

बाबूराम
प्रधान
सरक्षक सभा
गु० का० विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय कर्मचारी यूनियन हरिद्वार के मंत्री श्री साधूराम द्वारा श्री नारायणदत्त तिवारी, मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार के प्रति

कृतज्ञता ज्ञापन प्रपत्र

पत्र संख्या २५८/७६ दिनांक ७-८-७६

श्रीयुत नारायणदत्त तिवारी
मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।

महोदय,

हम गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के सब कर्मचारी आपको विशेष साधुवाद एव धन्यवाद भेज रहे है कि आपने गुरुकुल के वातावरण को पुन: शान्त एव पवित्र बना दिया है। आपका मार्गदर्शन लेकर जब से गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी गुरुकुल मे पधारे हैं तब से यहां का प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न है। पढने-लिखने का प्रबन्ध तथा अनुशासन आदि सुचारु-रूप से चल रहा है। इस विश्वविद्यालय की कर्मचारी यूनियन जो इण्टक तथा युवक काग्रेस से सबद्ध है प्रारम्भ से ही प्रधान मन्त्री के बीस सूत्री कार्यक्रम के पालन तथा प्रसारण के लिये प्रयत्नशील रही है। किन्तु विश्वविद्यालय के तत्कालीन अधिकारियों के तानाशाही रवैये के कारण कार्य पालन मे काफी बाधा पहुँच रही थी। ये स्वार्थी तत्व संस्था के शोषण के साथ-साथ पुलिस की सहायता से दमन की नीति भी अपनाये हुए थे। अब आपकी कृपा से वातारण अत्यन्त स्वच्छ हो गया है और विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारी व छात्र देश की प्रगति में अपना योगदान खुले दिल से कर रहे है। हम सब गुरुकुल कर्मचारी यूनियन के सदस्य आपको विश्वास दिलाते हैं कि यहाँ पूर्ण शान्ति के साथ सभी कुलवासी संस्था के विकास के लिये कार्य करते रहेंगे और आपके प्रगतिशील कार्यों एव प्रधानमन्त्री के २० सूत्री कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिये तत्पर रहेंगे।

साधुराम माहेश्वरी
मंत्री

प्रतिलिपि—
१- प्रधानमंत्री भारत सरकार, नई दिल्ली-१
२- गृहमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली-१।
३- रक्षामंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली-१।
४- राज्यपाल, उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ।
५- मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार, चण्डीगढ।
६- मुख्यमंत्री, पंजाब सरकार, चण्डीगढ।
७- अध्यक्ष, भारतीय युवक काग्रेस, नई दिल्ली-१।
८- अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी, १९ कैसर बाग लखनऊ।
९- महामंत्री, इण्टक, १७ जनपथ, नई दिल्ली-१।

साधुराम माहेश्वरी मंत्री

स्वामी इन्द्रवेश, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रति प्रेषित विभिन्न

बधाई एवं शुभकामना सन्देश

मुख्य मंत्री
सील
पंजाब

चंडीगढ़
अगस्त १६, १९७६

मान्यवर श्री इन्द्रवेश जी,

आपका पत्र नं० ३०३६, दिनाँक ७–८–७६ प्राप्त हुआ। यह जानकर अति हर्ष हुआ कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कार्य ठीक प्रकार से चल रहा है।

सद्भावना सहित,

शुभ चिन्तक
ह० जैलसिंह
(जैलसिंह)

श्री इन्द्रवेश जी,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर), उत्तर प्रदेश।

मुख्य मंत्री
सील
पंजाब

चंडीगढ़
अगस्त १६, १९७६

मान्यवर श्री इन्द्रवेश जी,

आपका पत्र दिनाङ्क १६–७–७६, जिसमें आपने मुझे गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) की पावन धरती पर आने के लिये निमन्त्रित किया है, प्राप्त हुआ। इसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। सितम्बर के अन्त तक मैं बहुत कार्यव्यस्त हूँ। इसके बाद कभी समय मिला तो आने की कोशिश करूंगा।

सद्भावना सहित,

शुभ चिन्तक
ह० जैलसिंह
(जैलसिंह)

श्री इन्द्रवेश जी
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर), उत्तर प्रदेश।

सील

रक्षामन्त्री, भारत
नई दिल्ली,
जुलाई २३, १९७६

प्रिय श्री इन्द्रवेश जी

आपका पत्र दिनांक १६ जुलाई, १९७६ का प्राप्त हुआ। मेरा अभी निकट भविष्य में आगामी अधिवेशन की वजह से गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) आने का कोई विचार नहीं है।

शुभ कामनाओं सहित,

आपका,
ह० बंसीलाल
(बंसीलाल)

श्री इन्द्रवेश-
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
डा० गुरुकुल कांगडी, जिला सहारनपुर।

सील

निजी सचिव
मुख्यमंत्री हरियाणा
चंडीगढ
जुलाई २८, १९७६

आदरणीय स्वामी इन्द्रवेश जी,

गुरुकुल कांगड़ी में अभिनन्दन समारोह के अवसर पर आपके निमन्त्रण के लिए मुख्य मंत्री जी आभारी है परन्तु उन्हें खेद है कि २९-७-७६ के लिये पूर्व निश्चित कार्य-क्रम के कारण वे इस समारोह में भाग नहीं ले सकेंगे।

वे इस समारोह की सफलता के लिए शुभकामनाएं करते हैं।

आदर सहित,

आपका
ह० अपठित
(ओ: प्र: साहनी)

स्वामी इन्द्रवेश,
कुलाधिपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

महासिंह
सील

कृषि मंत्री, हरियाणा
चंडीगढ़
अगस्त ११, १६७६

आदरणीय स्वामी जी,

आपके पत्र दिनाङ्क १६-७-७६ के लिये अति धन्यवाद। मैं अभी-अभी विदेश से लौटा हूँ। मुझे चण्डीगढ मे अपनी समस्याये है, इसलिये मैं इतनी जल्दी गुरुकुल मे नही आ पाऊगा। जब मौका मिलेगा तो मैं आपके दर्शन अवश्य करूंगा।

आदर सहित,

आपका
ह० महासिह
(महासिह)

स्वामी इन्द्रवेश,
कुलाधिपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय,
गुरुकुल कागडी, (सहारनपुर), उत्तर प्रदेश।

वीरेन्द्र वर्मा
कृषि मंत्री

सील

फोन कार्यालय–२२८७५
सी० एच० २८३
आवास–२७१०६
विधान भवन, लखनऊ–१
दिनांक जुलाई २२, १६७६

प्रिय श्री इन्द्रवेश जी,

आपका १६ जुलाई का पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। ३० जुलाई से मैं विदेश जा रहा हूँ तथा सितम्बर मे वापिस आऊगा। उसके उपरान्त जब भी सम्भव हुआ उधर आऊगा।

शुभकामनाओ सहित,

आपका
ह० वीरेन्द्र
(वीरेन्द्र वर्मा)

श्री इन्द्रवेश
कुलाधिपति,
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार, जिला सहारनपुर।

ओ३म्

डॉ० गंगाराम कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

के कर कमलों में सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्र

मान्यवर,

आज हम सभी छात्रों को आपके द्वारा कुलपति पद-ग्रहण के अवसर पर अभिनन्दन करते हुए परम हर्ष हो रहा है।

आपको यह पत्र आपकी लगभग २४ वर्षों की सेवा, जिसके १० वर्ष आपने कुलसचिव के उत्तरदायी पद पर रहते हुए समालंकृत किये हैं, दिया जा रहा है। आपकी कुशाग्र बुद्धि तथा सुचारू कार्य करने की क्षमता ने विश्वविद्यालय को जितना आलोकित किया है, वह सभी को विदित है।

श्रद्धेय! आप अनुशासन को बनाये रखने के लिए सतत् चिन्तित रहे है। संघर्ष के समयो में आपने सदा लौहपुरुष का आवरण पहने रखा। आपकी कर्मठता, सत्यनिष्ठा कार्य-संलग्नता तथा न्यायोचित प्रबन्ध कुशलता से हम सभी लोग भली प्रकार परिचित हैं।

हमें विश्वास है कि आप जैसे कुशल प्रबन्धक के हाथों मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का यह वृक्ष सदा पल्लवित और पुष्पित होता रहेगा।

हम हैं आपके

दिनाङ्क : ३१-८-१९७६
मंगलवार।

विज्ञान महाविद्यालय के
समस्त छात्र

डॉ० गंगाराम जी गर्ग के कुलपति पद ग्रहण करने के अवसर पर उनका स्वागत

यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आज के दिन श्री डॉ० गंगाराम जी गर्ग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति पद को ग्रहण कर रहे हैं। इस अवसर पर मैं भी आप सबके साथ इनको हार्दिक बधाई देता हूं। प्रार्थना करता हूं कि वे चिरायु हो और परमेश्वर उन्हे शक्ति दें कि वे इस गुरुतर कार्य को सफलता से निभा सकें। पूर्ण आशा है कि उनके कुलपति पद पर आसीन होने पर इस विश्वविद्यालय की शिक्षा का स्तर ऊंचा होगा। माननीय शिक्षक वर्ग जो अब भी शिक्षा देने में पर्याप्त दिलचस्पी लेते है आगे और अधिक दिलचस्पी लेगे। शिक्षार्थियों से आशा है कि वे शिक्षा प्राप्ति में और अधिक जुटेंगे तथा अतिरिक्त विषयो पर ध्यान न देगे। छात्र का मस्तिष्क जो बन्द सा होता है उसे शिक्षा विकसित करती है। जिस छात्र को शिक्षा नही मिलती उसका मस्तिष्क बन्द सा ही रह जाता है। यदि किसी की आंख या कान बन्द से रह जायें तो यह उसका कितना दुर्भाग्य है इसी प्रकार यदि किसी का मस्तिष्क बिना शिक्षा के बन्द सा ही रह जाये तो यह उसका कितना दुर्भाग्य है। छात्रो का यह कितना सौभाग्य है कि उन्हे यहां शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिला है। उन्हे इस अवसर से पूर्ण लाभ उठाना चाहिये। इंग्लिश के एज्यूकेशन शब्द का अर्थ है वह चीज जो डेवलपमेंट का साधन हो। जैसे फूल की एक बन्द सी कली सूर्य प्रकाश पाकर एक खिले हुए फूल के रूप में परिवर्तित हो जाती है ऐसे ही बालक का मस्तिष्क रूपी अनखिला फूल शिक्षा के द्वारा खिलकर एक सुन्दर सुगन्धित पुष्प बन जाता है। छात्रों को चाहिए अन्य सब कार्य छोडकर वे अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करने मे लगे रहे पर शिक्षा भी एक साधन है मनुष्य का साध्य या लक्ष्य तो सचाई या रियलिटी का जानना या देखना है। अशिक्षित व्यक्ति सच्चाई को देख नहीं सकता। शिक्षित ही सचाई को ढूंढता है और देख सकता है। सच्चा शिक्षित वह है जो सच्चाई का अन्वेषक हो पक्षपाती न हो जिसका दृष्टि-कोण वैज्ञानिक हो। श्रुति ने कहा है पूषन् सचाई के उपर जो सोने का बना ढकना पडा है उसे हटा देना कि मै सच्चाई को देख सकूं। सच्चाई का देखना ही शिक्षा का उद्देश्य है। अर्थोपार्जन भी एक उद्देश्य है क्योकि वह शरीर के विकास के लिये जरूरी है 'सत्य धर्मा दृष्टये' कह कर श्रुति ने सत्य के ढूढने और देखने को जीवन का या शिक्षा का उद्देश्य कहा है। दूसरे शब्दों मे शिक्षा का उद्देश्य शरीर मन और आत्मा तीनो का विकास करना है।

अभिप्राय यह है कि शिक्षणालय मे शिक्षा का ही वायुमण्डल रहना चाहिए। परमेश्वर करे आपके कुलपति पद पर रहने के काल मे यह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय शिक्षा का एक उत्तम क्रीड़ास्थल या फारम बने।

वैद्य धर्मदत्त

विश्वविद्यालयीय छात्रों द्वारा स्वागत

हे हे उदार मानव स्वागत है आज तेरा ।
उपहार के प्रणय से स्वागत है आज तेरा ॥
हे हे ! ... ...

इक प्रेम वन्दना से छोटी सी साधना से ।
कुल भूमि पुष्प लेकर करती सिंगार तेरा ॥
हे हे ! ... ...

इक चाह है हमारी इक बात है हमारी ।
हम बच्चे हैं तुम्हारे, देना हमें सहारा ॥
हे हे ! ... ...

कुलवासी हम तुम्हारे अब भेंट क्या चढ़ायें ।
श्रद्धा-सुमन की माला स्वीकार हो हमारा ।
हे हे ! ... ...

नव प्रेम वाटिका के फूलो से है सजाया ।
संभार यह हमारा गलहार हो तुम्हारा ॥
हे हे ! ... ...

वैदिक राष्ट्र गान

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हो द्विज बुद्ध तेजधारी ।
क्षत्री महारथी हों अरि दल विनाश कारी ॥
होवे दुधारु गौवें पशु अश्व आशुवाही ।
बलवान सभ्ययोद्धा यजमान पुत्र होवे ॥

कुलपति के नाम पत्र

हिन्दू महा सभा　　　　टेलीफोन . ४६४५६ / ४६६४४
तार : हिन्दू महा सभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा

पोस्ट बाक्स ७०३,
नई दिल्ली–१

क्रमांक : निजी

दिनाङ्क ८–९–७६

प्रिय बन्धुवर,

सादर सप्रेम नमस्ते ।

आपका ७–९–७६ का पत्र मिला। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति पद का भार ग्रहण करने पर मेरे हृदय में मिश्रित प्रतिक्रिया हुई ।

जिन परिस्थितियों में आपने यह गम्भीर दायित्व लिया है सर्वथा संस्था के तात्कालिक हित में है । आपका रजिस्ट्रार और प्राध्यापक के रूप में इस महान् संस्था की सेवा का दीर्घकालीन अनुभव और समय-समय पर हो चुकने वाले संघर्षों व बवण्डरों के वातावरणों के मंच पर खेले जाने वाले नाटकों के प्रसिद्ध पात्रों, उदात्त नायकों और खल-नायकों के मनोविज्ञान का अवबोध– आपका पूरा सहायक होगा । परन्तु मुझे डर है कि नई उलझनें और कुछ विपरीत परिस्थितियां आपको विह्वल न कर दें । अतः बहुत सावधानी और सतर्कता की आवश्यकता है ।

प्रभु पर भरोसा रखिये, अन्ततोगत्वा सभी मार्ग परिमार्जित हो जायेंगे। प्रिय बहिन जी की सेवा में नमस्ते । बच्चों को प्यार और आशीर्वाद ।

आपका

रामसिंह

रणवीर सिंह
उपनेता
कांग्रेस पार्टी राज्य सभा।

सील

टेलीफोन : ३७७८०७
३७७६३०
३७७८१२
२४ पार्लियामैंट हाउस
नई दिल्ली

सितम्बर १४, १९७६

प्रिय डॉक्टर साहब,

आपका पत्रांक ५४४२, दिनाङ्क ७-९-७६ का प्राप्त हुआ। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपने २८ अगस्त से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति का पद भार संभाल लिया है।

समय मिलने पर मैं यथाशीघ्र गुरुकुल कांगड़ी संस्था में उपस्थित होने का प्रयास करूंगा।

ससम्मान,

आपका.
ह० रणवीर सिंह
(रणवीर सिंह)

डॉ० गंगाराम,
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार, जिला सहारनपुर (उ०प्र०)

सील
मुख्यमंत्री हरियाणा

डी.ओ.न. सी एम एच —७६/४७३३
मुख्यमंत्री हरियाणा
चंडीगढ़
सितम्बर १५, १६७६

प्रिय डॉ० गंगाराम जी,

आपका पत्र क्रमांक ५२६८, दिनांक १०—८—७६ का मिला। धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का पद ग्रहण कर लिया है। अवसर मिलने पर मैं अवश्य ही विश्वविद्यालय आने का प्रोग्राम बनाऊंगा।

आदर सहित,

आपका
ह० बनारसीदास गुप्त
(बनारसीदास गुप्त)

डॉ० गंगाराम,
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
(सहारनपुर)

सेंटर आफ एडवांस स्टडी, शिमला, २०-६-७६

प्रिय डॉ० गर्ग,

आपका ७—६ का पत्र कल मैं पंजाब से लौटा तब मिला। यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि आप कुलपति पद पर आसीन हुए। आपकी योग्यता का यह सही उपयोग हुआ है।

आपका :-
ह० डॉ० प्रभाकर माचवे

१५ अगस्त को कुलपति डॉ० गगाराम
एन सी सी की टुकड़ी का निरीक्षण करते हुए ।

१५ अगस्त समारोह के अवसर पर विद्यालय के छात्रों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन ।

विज्ञान महाविद्यालय के प्रिंसिपल श्री सुरेशचन्द्र जी अति प्रसन्न मुद्रा मे माल्यार्पण करते हुए बाई ओर बैठे हैं पं० सुखदेव जी दर्शन वाचस्पति, भूतपूर्व उपाचार्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और डॉ० अनतानंद जी।

आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. अनतानद जी कुलपति डॉ० गगाराम को माल्यार्पण करते हुए। चित्र मे कुलपति उन्हे ही माला पहिनाने का प्रयत्न कर रहे है।

विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उप कुलपति डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय ३१ अगस्त, ७६ को कुलपति डॉ० गगाराम को श्रद्धाभाव से माल्यार्पण करते हुए।

ओ३म्

गुरुकुल समाचार

ऋतु-रंग

- 'नीर' विद्यालंकार

मई-जून लगते ही ऋतु मे विशेष उष्णता व्याप्त हो गई। धरती तपने लगी। ज्येष्ठ दहकने लगा। साथ ही मौसम की विचित्रता के दर्शन भी होते रहे। उष्ण हवाओ के थपेडे धूल और रेत के गुब्बारे उडाते रहे। मध्यान्ह का ताप असह्य हो उठा। नीम, जामुन कटहल, नीबू आदि मे फलोद्भव होने लगा। आमो का अभाव होने से, आम्र—निकुञ्जो में उदासी छायी रही। मोतिया (रुजारा) की भीनी-भीनी मादक गंध बिखर गयी। कनेर भी पुष्पित हो गये। 'गुलेचीन' के श्वेत-श्वेत, पीत-पीत पुष्पो की मादक सुरभि से वातावरण महकने लगा। गुलाब, गेंदा, गुलमोहर की छटा आकृष्ट करती रही। अमलतास वृक्ष पर अंगूरो के समान पीले—पीले पुष्प-गुच्छ लटकते-झूमते-बिखरते हुए कुल भूमि का अभिनन्दन करते रहे। आक ढाक, शीशम, पीपल सभी फूल उठे। वातावरण मे तपन और तीक्ष्णता होते हुए भी प्राकृतिक सौन्दर्य की मनमोहनी माधुरी कुलवासियो के हृदय को प्रफुल्लित एव उल्लसित करती रही। गगनहर का स्नान ताप से संतापित शरीरो को सुख प्राप्त करता रहा। शीतल व मधुर पेय पान करने की उत्कण्ठा तीव्रतम होने लगी। विद्युत् पंखे पूर्ण वेग से घूमने लगे। अकस्मात् मौसम मे विकटता आती रही। भयकर आंधी—तूफान और ओला-वृष्टि से समस्त गुरुकुलीय वातावरण विकम्पित एवं विक्षुब्ध हो उठा। ओलो की सफेद चादर सी बिछ गयी। किन्तु मई-जून का ऋतु-रग एकदम तपन और उमस भरा रहा। शरीर स्वेद कणो से स्नात हो उठा। पूर्वी और पश्चिमी वायु के तीव्रतम झोके चलते रहे।

इधर जुलाई व अगस्त मास लगते ही कुलभूमि मे पुन जीवन सञ्चार हो उठा। राजा इन्द्र की मेघ रूपी विकट सेना अम्बु-राशि का परिवेश धारण कर कुल-भूमि को अपनी सुधावर्षिणी जल धारा से आलावित करने लगी। मेघो की गडगडाहट और चमचमाहट के बीच प्रभूत जल-वृष्टि हुई। नीम की कड़वी-मीठी गंध वायु मे विलीन हो गयी। निबोलिया व जमोये पक गये। बीरबहूटी व केंचुए प्रादुर्भूत हो गये। वनस्पतियो मे नया जीवन आ गया। ताल-तलैया खड्ड सब जल पूर्ण हो गये। सावन-भादो की ठण्डी-ठण्डी फुहारें पडने लगीं। मूसलाधार वर्षा के सतत प्रवाह को धरती का हृदय निरन्तर समेटता रहा। समीपस्थ नहर का जल मटमैला हो चला। चहुंओर हरीतिमा ही हरीतिमा छा गयी। दादुरो और झिल्ली का उच्च स्वर

रजनी की निस्तब्धता को टोकता रहा। बिच्छु व सापो का भय बना रहा। विविध कीट-पतंगो की उत्पत्ति बढ चली। मच्छरों व मक्खियों से वातावरण आक्रान्त रहा।

विद्यालय विभाग

इस बार विद्यालय-विभाग का वार्षिक-परीक्षा परिणाम संतोष जनक रहा। क्रमश: प्रथम द्वितीय तृतीय निम्न रहे:—

प्रथम श्रेणी:—सूर्यपाल, संजीव तथा सुरेश, दीपवर्धन।
द्वितीय श्रेणी.—मनीष, संजय, अजय।
तृतीय श्रेणी —महेन्द्र कुमार, श्याम दत्त, विपुल तथा सुनीलदत्त।
चतुर्थ श्रेणी —गजेन्द्र, रवीन्द्र कुमार, देवेन्द्रपाल सिह, तथा वीरेन्द्र।
पंचम श्रेणी:—नरेश, दिगम्बर सिह, गुलाब सिंह।
षष्ठ श्रेणी:—भोलेराम, इन्द्रपाल, उमाशकर।
सप्तम श्रेणी:--राकेशकुमार, भगवानसिह, महेश कुमार।
अष्टम श्रेणी —रमेश, गणेश कुमार, कमल कुमार।
दशम श्रेणी —ब्र. कलम सिह, का स्थान प्रथम रहा।

आचार्य डॉ० रामनाथ जी वेदालकार का —विदाई समारोह—

विद्यालय-विभाग के छात्रो ने आचार्य एवं प्रोवाइसचांसलर डॉ० रामनाथ जी को ससम्मान विदाई दी। सभी छात्रो ने आचार्य जी के स्नेह और वात्सलयपूर्ण स्वभाव की चर्चा की। आचार्य जी ने विद्यालय-विभाग को वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए स्नेह-स्मृति स्वरूप अपनी धर्म-पत्नी के नाम से चांदी की एक शील्ड प्रदान की तथा विद्यालय पुस्तकालय के लिए कुछ साहित्य भी प्रदान किया। समस्त विद्यालय-परिवार आचार्य जी का आभारी है। तथा चण्डीगढ विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ के अध्यक्ष बनने पर आपका हृदय से अभिनन्दन करते हुए सदैव स्नेह की आशा करता है। ३१ जुलाई को वेद तथा कला महाविद्यालय मे भी विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। कुलपति डॉ० गगाराम ने डॉ० रामनाथ जी की सेवाओ की भूरी-भूरी प्रशसा की और उन्हे विश्वास दिलाया कि गुरुकुल उन्हे कभी नही भूल सकता।

विद्यालय--छात्रों द्वारा चुनाव

विद्यालय के छात्रो ने श्री तिलकराज की अध्यक्षता में निम्न चुनाव किये:—

सभा मंत्री:—नरेन्द्र, उपमंत्री:—विनोद, क्रीड़ा मत्री.—द्विजेन्द्र, उपमत्री:—विश्वामित्र, हॉकी कप्तान —प्रदीप, उप कप्तान—यशपाल, फुटबॉल कप्तान:—विश्वामित्र, उप कप्तान —अश्विनी, क्रिकेट कप्तान —सुनील, उप-कप्तान:—रवीन्द्र, बॉलीबाल कप्तान.—द्विजेन्द्र,उपकप्तान :—चन्द्रप्रकाश, टेबिल टेनिस कप्तान:—रणपाल उपकप्तान.—चन्द्रप्रकाश, बैडमिंटन कप्तान.—विश्वामित्र, उपकप्तान.—नरेन्द्र, तैराकी—चन्द्रप्रकाश, मेघवीर, कुश्ती संचालक:—रणपाल, राकेश, कबड्डी कप्तान —प्रदीप, उपकप्तान:—अश्विनी।

विद्यालय के नये मुख्याध्यापक:—

विद्यालय-विभाग मे श्री प० अनूपसिह जी शास्त्री ने मुख्याध्यापक का कार्य भार सभाल लिया है। आप आर्यमहाविद्यालय किरठल के स्नातक हैं तथा

गुरुकुल घासीपुरा के लगभग १० वर्ष तक आचार्य रहे। आप वेदवाचस्पति, शास्त्री तथा शिक्षा शास्त्री है। इस प्रकार आप अनुभवी आर्य समाजी ही नही शिक्षा शास्त्री व अच्छे प्रबंधक भी है। आपकी संरक्षता मे विद्यालय उत्तरोत्तर उन्नति की ओर प्रगतिशील है।

संरक्षक-सभा की बैठक:—

१-५-७६ को जो सरक्षक सभा की बैठक हुई उसमें अनेक विषयों पर विचार हुआ। श्री बाबूराम जी आर्य (प्रधान) के अनुसार मुख्य विषय निम्न थे:— (१) षष्ठ व दशम कक्षाओ मे पढाई जाने वाली इतिहास की पुस्तको मे से वे भाग अलग किये जाये, जिनमे लिखा है कि 'आर्य लोग मास आदि का भक्षण' करते थे। (२) विद्यालय अस्पताल को छात्रो के आश्रम मे लाना रुग्ण एव स्वस्थ छात्रो दोनो के हित मे नही है। (३) विद्यालय-आश्रम मे अधिष्ठाता सात्विक विचार वाले व प्रौढ तथा अध्यापक गुरुकुलीय विचार प्रवृत्ति के लिये जाये।

विविध-क्रिया कलाप :-

विद्यालय विभाग मे जुलाई व अगस्त मे छात्रो की वाक् शक्ति को बढाने के लिए प्रति शनिवार को सभाएं होती रही। मुख्याध्यापक श्री अनूप सिह जी ने ब्रह्मचारियो को इस ओर विशेष प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार-क्रीडा-सम्बन्धी आयोजन भी होते रहे। विद्यालय-टीम ने ज्वालापुर महाविद्यालय की टीम को कबड्डी व फुटबाल में पराजीत किया। १०-८-७६ को परिवार टीम के साथ फुटबाल मैच बराबर रहा। इसी प्रकार नित्य प्रति फुटबॉल, बालीबॉल, बैडमिंटन अंखीकूद आदि के खेल होते रहे।

ब्र. देवकेतु का बल प्रदर्शन:—

उदीयमान कुलीय भीम एवं अभिमन्यु ब्र. देव केतु ने पीलीभीत, बस्ती तथा बहराइच आदि स्थानो मे अपने अद्‌भुत ब्रह्मचर्यबल का प्रदर्शन किया। देवकेतु ने दो कारों को एक साथ रोककर, छाती पर से कार उतरवाकर, जंजीर तोडकर, छाती पर पत्थर तुडवा-कर जनता को मोहित व आश्चर्य चकित कर दिया।

पंचपुरी तैराकी प्रतियोगिता:—

२-५-७६ को समस्त हरिद्वार क्षेत्र के लिए एक तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता मायापुर पुल से प्रारम्भ होकर गुरुकुल के मोतीघाट पर समाप्त हुई। इस प्रतियोगिता मे श्री ओकारसिह (कनखल) प्रथम तथा श्री सुनील कुमार द्वितीय तथा श्री दयाराम तृतीय एव विनोद शर्मा चतुर्थ रहे। छोटे छात्रो की प्रतियोगिता मे विद्यालय-विभाग गुरुकुल के ब्र राजेश १० वी ब्र किशोर ७वी तथा ब्र विजयेन्द्र ७वी प्रथम, द्वितीय तृतीय रहे। पुरस्कार वितरण चीफ इन्जीनियर गग नहर ने किया। इस प्रतियोगिता के सरक्षक तत्कालीन कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी तथा संयोजक श्री डॉ. अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालंकार प्रिंसिपल आयुर्वेद महाविद्यालय रहे।

आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी:—

आर्य समाज की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए १-५-७६ को प्रतिनिधियों का चुनाव

इस प्रकार रहा । कुल प्रतिनिधि थे १७ । इसमें ३ अवैध, २ नाम वापिस लिये । निर्विरोध प्रत्याशी चुने गये १२ । आर्य समाज के सदस्यों की सख्या कुल २६५ चन्दा कम जमा होने से नाम कटे३३ । इसप्रकार शेष कुल मतदाता थे २३२ । निर्विरोध चुने गये प्रत्याशियो की सूची—सर्व श्री प्रतापसिंह जी, शेखरानन्द जी, साधुराम जी, धर्मपाल सिंह जी नेहरा, हरिभजन जी, कालूराम जी, इन्द्रसेन जी, चैतन्य वल्लभ जी, महावीर जी, सुरेशचन्द जो त्यागी, तथा डा० वासुदेव जी चैतन्य ।

इसके अतिरिक्त जुलाई, अगस्त मे स्वामी रुद्रवेश जी के भजनोपदेश भी होते रहे । श्री शोभाराम जी 'प्रेमी' के भी मधुर व ओजस्वी भजन हुए ।

स्वामी इन्द्रवेश जी का आगमन

१५ जुलाई । स्वामी इन्द्रवेश जी गुरुकुल पधारे और कुलाधिपति रूप मे एक आज्ञा प्रसारित की कि सभी विभागो को सहयोग करना चाहिए । इस आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि १६ जुलाई १९७६ को आचार्य डॉ रामनाथ जी वेदालंकार को भी दी गयी । १५ जुलाई को स्वामी जी ने सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियो की एक बैठक बुलाई और सभी ने सहयोग का आश्वासन दिया । १६ जुलाई की रात्रि को डॉ. गंगाराम जी जो उस समय कुलसचिव एवं कार्यवाहक कुलपति थे स्वामी जी की बातचीत उनसे हुई । स्वामी जी ने उन्हे दिल्ली न्यायालय के १५ मई के निर्णय की तथा अन्य न्यायालयो द्वारा प्राप्त स्टे की प्रतिलिपियाँ दी । जिसके अनुसार सोनीपत मे उन्हे आर्य प्र. नि. सभा, पंजाब का निर्वाचन करने पर से रोक हटा दी गयी ।

स्वामी जी ने डॉ गंगाराम को जालंधर न्यायालय की प्रतिलिपि भी दी जो २७ मई को हुआ था । इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने अनेक पत्र भी दिये । साथ ही स्वामी जी ने डॉ गंगाराम जी से यह अनुरोध किया कि वे उन्हें कुलाधिपति रूप में स्वीकार करें । डॉ. गंगाराम जी ने सम्बद्ध निर्णयो को देखते हुए उन्हे कुलाधिपति रूप में स्वीकार कर लिया । १८ जुलाई को डॉ० गंगाराम जी ने शक्ति-आश्रम के समारोह मे कार्यवाहक कुलपति के रूप मे भाग लिया और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी को माल्यार्पण किया । उसके पश्चात् सीनेट तथा विद्यासभा की बैठकें हुई । उनमे अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये ।

२० जुलाई को प्रात: १० बजे सीनेट मे स्वामी जी की अध्यक्षता मे विश्वविद्यालय के सभी उपाध्यायों की बैठक हुई । इसमे स्वामी जी ने इस बात पर बल दिया कि सभी शिक्षको को छात्रो की सख्या बढाने मे योग देना चाहिए । डॉ० गंगाराम जी ने कहा कि-विश्वविद्यालय ने तो भारत के प्रमुख अंग्रेजी व हिन्दी के समाचार पत्रो मे विश्वविद्यालय की ओर से विज्ञापन करवा दिया है । पञ्चपुरी के समाचार पत्रो मे भी विज्ञापन परिपत्र भेजा जा चुका था । कोई विभाग अपनी ओर से विज्ञापन कराना चाहे या कोई उपाध्याय आसपास के विश्वविद्यालयो मे जाना चाहे तो उसका वास्तविक व्यय विश्वविद्यालय दे देगा ।

इस प्रकार स्वामी इन्द्रवेश जी ने गुरुकुल मे पधार कर कुलाधिपति के रूप मे कार्य प्रारम्भ कर दिया है ।

विश्वविद्यालय के नव-कुलसचिव श्री बलजीत सिंह जी आर्य माल्यार्पण करते हुए । दाईं ओर बैठे हैं श्री शिवचरण जी सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं बाईं ओर समारोह के अध्यक्ष श्री रामधारी सिंह ।
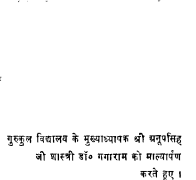
गुरुकुल विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री अनूपसिंह जी शास्त्री डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए ।

आनन्द कुमार एम. ए के एक छात्र डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए ।

प्रसिद्ध साहित्यकार पंडित किशोरीदास जी वाजपेयी कुलपति डॉ० गंगाराम को माल्यार्पण करते हुए ।

बी. एस-सी. का एक छात्र डॉ गंगाराम कुलपति को अभिनन्दन पत्र भेंट करता हुआ ।

पंचपुरी नागरिको की ओर से श्री काश्मीर सिंह राही वर्तमान उप कुलसचिव, कुलपति को माल्यार्पण करते हुए ।

कुछ नयी नियुक्तियां

गुरुकुल एवं गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्वामी इन्द्रवेश जी के कुलाधिपतित्व मे सीनेट व विद्या-सभा ने कुछ नयी नियुक्तियाँ इस प्रकार की है —

गुरुकुल विश्वविद्यालय के विजिटर–स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज। कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता–डॉ० गगाराम जी। कुलसचिव–श्री बलजीत सिह जी आर्य। उप कुलसचिव– डॉ० काश्मीर 'राही'। आचार्य एव उप कुलपति– डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय। मुख्याध्यापक–श्री अनूपसिह जी शास्त्री। स० मुख्याधिष्ठाता -श्री शिवचरण जी विद्यालंकार। कृषि अधीक्षक– श्री ओमपाल सिह जी। विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष–डॉ० कृष्णलाल जी आनन्द। वित्त समिति मे– श्री सरदारी लाल जी को सदस्य नियुक्त किया है। फार्मेसी के व्यवस्थापक– श्री पं० मुरारीलाल जी बनाये गये है।

श्रावणी पर्व

९–८–७६ को अमृत वाटिका स्थित भव्य यज्ञशाला मे आश्रमाध्यक्ष श्री योगेन्द्र जी पुरुषार्थी के नेतृत्व में वृहद् यज्ञ हुआ। नवीन यज्ञोपवीत धारण किया गया। विद्यालय विभाग के समस्त छात्रो ने शांति पूर्वक समारोह मे भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् कुलपति डॉ० गगाराम जी ने श्रावणी पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वेदो के स्वाध्याय की ओर प्रेरित किया। प्राचीन ज्ञान एव नवीन विज्ञान दोनो के समन्वय की ओर इंगित करते हुए रक्षाबंधन का महत्व प्रतिपादित किया। श्री सुरेश चन्द जी त्यागी ने आचार्य पद से बोलते हुए गुरुकुल के पुनर्निमाण की ओर ध्यान आकृष्ट किया। अन्त में स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने कहा कि "श्रावणी के पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा करें कि निराशा की बाते न करे गे। यहाँ उत्साह की बात करे।" शान्ति-पाठ के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

१८ अगस्त को वेद मन्दिर के भव्य-भवन मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बडी धूम-धाम से मनाया गया। वृहद् यज्ञ के पश्चात् गीता के दूसरे अध्याय का पाठ हुआ। इसके पश्चात् प्रो० बुद्धदेव जी ने दूसरे अध्याय का सक्षिप्त भाव बताया। तदन्तर कुलपति डॉ० गगाराम जी की अध्यक्षता मे सभा हुई। प्रो० ओमप्रकाश जी (दर्शन विभाग) ने बताया कि प्रद्युम्न जैसे पुत्र को प्राप्त करने के लिए श्री कृष्ण जी ने सपत्नीक १२ वर्ष तपस्या की। डॉ० सूर्यप्रकाश विद्यालकार ने कहा कि गुरुकुल की शिक्षा कुछ कमियो के होते हुए भी सर्वोत्तम है। श्री ओमपाल सिह जी कृषि अधीक्षक ने ब्रह्मचर्य के महत्व पर बल दिया। विद्यालय के छात्रो ने भी अपनी-अपनी रचनाएं सुनाई। श्री सुरेश चन्द जी त्यागी ने कहा कि हमे निर्भीक होकर गुरुकुल के आदर्शो पर चलना चाहिए। श्री रामधारी सिह जी शास्त्री ने बताया कि श्रीमद्भगवद् गीता हमारे वेद आदि का निचोड है। अन्त मे अध्यक्ष पद से कुलपति ने कहा कि "जो श्री कृष्ण १२ वर्ष सपत्नीक तपस्या कर सकते है उन पर यह आरोप लगाना कहाँ तक उचित है कि उनकी १६ हजार रानियाँ थी। वस्तुतः गुरुकुल का उद्देश्य अपने छोटे छात्रों मे यह सस्कार बैठाना है कि श्री कृष्ण जी महान योगी थे। भोगी नही। स्वामी दयानन्द जी महाराज

ने भी सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण के चरित्र को आदर्श माना है। गुरुकुल को इस सत्साहित्य का निर्माण करना चाहिए।" शांति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

स्वतन्त्रता-दिवस समारोह

पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी आजादी की २६ वी वर्षगांठ बड़े हर्षोल्लास से मनायी गयी। सर्वप्रथम कुलपति डॉ० गंगाराम जी ने राष्ट्रीय-ध्वजा फहराई। तदन्तर परेड का निरीक्षण किया एवं शपथ-ग्रहण की गयी। इसकी व्यवस्था एन. सी. सी. के अफसर प्रो० वीरेन्द्र द्वारा की गई। उनके द्वारा किया गया प्रबंध सराहनीय था। स्वतन्त्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मान्य कुलपति जी ने कहा कि "आजादी का झण्डा भारत की आजादी का प्रतीक है किन्तु जिस भारत की स्वतन्त्रता का यह प्रतीक है उस भारत के विषय में कुछ जानकारी देना मैं आवश्यक समझता हूँ। जिस जगह अब हिमालय है वहाँ पहले समुद्र था। दक्षिण भारत की नदिया इसी हिमालय के समुद्र मे गिरती थी। जब हिमालय का उदय हुआ तो दक्षिण पठार और हिमालय के बीच एक बहुत गहरा गड्ढा हो गया। जिसमें हजारो वर्षो तक रेत भरती गयी। यही गंगासिंधु का मैदान है। तीन हजार फुट तक की गहराई तक खोदा जाये तो एक ही प्रकार की मिट्टी मिलेगी। इस दक्षिण पठार का सम्बन्ध अफ्रीका महाद्वीप एवं दक्षिण अमरीका से था। ये धीरे-धीरे अलग हो गये। पहले सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र ये तीनों नदियां एक थी पर कालान्तर में अलग-अलग हो गयीं। वस्तुतः पहले यमुना सरस्वती से मिलकर सिंधु की ओर बहती थी। पंजाब की जो आज ५ नदिया हैं। वे प्रारम्भ में बहुत छोटी छोटी नदियां थी। धीरे-धीरे उनका बड़ा आकार हो गया।

हमारे इतिहास को ही लीजिये। सतयुग में महाराजा हरिश्चन्द्र हुए। त्रेता में महाराज रामचन्द्र और द्वापर में श्री कृष्ण चन्द्र तथा कलियुग में हम सब। महाभारत काल को लगभग ५००० वर्ष पूर्व का माना जाता है। इसके बाद मे इस देश मे अनेक महान विभूतियां हुई। जैसे महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, गुप्त साम्राज्य के महान शासक, गुप्त शासन ने ५०० वर्ष तक हूणों का मुकाबला किया। फिर मुसलमानो के कई वंश आये। उनसे भी टक्कर ली। पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी एव गुरु गोविन्दसिंह के नाम उल्लेखनीय है। अंग्रेजों के शासन से भी डट कर मुकाबिला किया गया। भगवान् तिलक, महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरु, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर के नाम उल्लेखनीय हैं। क्रान्ति द्वारा जो सरकार का तख्ता उलटना चाहते थे उनमें रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, अशफाकउल्ला आदि हैं।

इस गुरुकुल ने भी स्वतन्त्रता-संग्राम मे अपनी भूमिका निभाई है। पहले हमारा गुरुकुल, कांगड़ी ग्राम में था, जिसे स्वामी दयानन्द जी के महान् शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने स्थापित किया था। उसी गुरुकुल में महात्मा गांधी तीन बार पधारे। आज भी वह कुटिया विद्यमान है। इस पावन पर्व पर हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी आजादी की रक्षा करें। पर यही पर्याप्त नही है हमे अपने देश का नाम संसार के महान् राष्ट्रों मे करना होगा। आओ हम

आज यह संकल्प लें।"

तदनन्तर आचार्य डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय ने शिक्षामंत्री उत्तर प्रदेश तथा शिक्षा निदेशक लखनऊ के संदेश सुनाये। अन्त में 'भारत माँ की जय' से कुल भूमि गूंज उठी। हर्षोल्लास के मध्य समारोह समाप्त हुआ।

श्री नाथूराम जी मिर्धा, अध्यक्ष, कृषि आयोग भारत सरकार का ८ अगस्त १९७६ को गुरुकुल कांगड़ी में स्वागत

श्री नाथूराम जी मिर्धा ८ अगस्त को प्रातः १० बजे गुरुकुल पधारे। कुलपति निवास पर स्वामी इन्द्र-वेश जी महाराज कुलाधिपति और डॉ० गंगाराम जी कुलपति ने उन्हें माला पहनाई। जलपान के पश्चात् श्री मिर्धा जी सीनेट हाल गये जहाँ पर उनका भव्य स्वागत किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमंत्री श्री रामधारी शास्त्री, आयुर्वेद महाविद्यालय की ओर से डॉ० अनन्तानन्द जी, वेद एवं कला महा-विद्यालय की ओर से प्रिंसिपल सुरेश चन्द जी, गुरुकुल विभाग की ओर से श्री शिवचरण जी स० मुख्याधि-ष्ठाता ने, गुरुकुल विद्यालय की ओर से श्री अनूपसिंह जी शास्त्री, पंचपुरी की ओर से डॉ० काश्मीर राही, कर्मचारियों की ओर से श्री साधुराम जी, सग्रहालय की ओर से सग्रहालयाध्यक्ष डॉ० विनोद चन्द्र जी सिन्हा, श्री ओमप्रकाश मित्र प्रोक्टर, श्री जबरसिंह सेंगर पुस्तकालय ध्यक्ष, एन० सी० सी० के लैफ्टीनेन्ट श्री वीरेन्द्र अरोरा, श्री ओमपाल सिंह कृषि अधीक्षक, रिसर्च स्कालर पं० भगवतदत्त् जी, गुरुकुल आर्यसमाज के प्रधान डॉ० हरगोपाल सिंह, श्री चैतन्य और विद्या-लय के सबसे छोटे छात्र ने श्री मिर्धा जी को माल्या-र्पण किया।

कुलपति डॉ० गंगाराम जी ने कुलाधिपति स्वामी इन्द्रवेश जी से माननीय अतिथि का परिचय देने की प्रार्थना की। स्वामी जी महाराज ने परिचय देते हुए बतलाया कि मिर्धा जी बहुत छोटी आयु मे ही अपनी प्रतिभा के कारण मंत्री बन गये थे और आपके परिवार का राजस्थान के निर्माण मे बडा योग दान है। आपके भाई श्री रामनिवास जी मिर्धा केन्द्रीय मत्रालय मे मत्री पद पर आसीन हैं। कृषि प्रधान भारत की समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिये ही एक कृषि आयोग की स्थापना की गयी, जिसके अध्यक्ष श्री नाथूराम जी मिर्धा हैं। डॉ. गंगाराम जी ने गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय देते हुए वृक्षारोपण के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि जिस प्रकार से मनुष्य शरीर मे फेफड़े उसके रक्त की शुद्धि करते हैं, ठीक उसी प्रकार वृक्ष वायु को शुद्ध करते है। यदि पृथ्वी पर से वृक्ष समाप्त हो जायें तो मनुष्य जीवित नही रह पायेगा। अत. वृक्षो का सभी दृष्टियों से महत्व है- चाहे भोजन रूप मे, इमारती लकड़ी के रूप मे और इंधन के रूप में। महाभारत काल के बाद जंगलो को काट कर खेती करने की प्रथा थी पर अब मनुष्य वृक्षो के महत्व को समझ गया है। हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और युवा नेता श्री संजय गांधी का इस बात पर बल है कि वृक्षारोपण का कार्य-क्रम पूर्ण गति से हो।

माननीय अतिथि ने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के आगमन से गुरुकुल का वातावरण स्वच्छ हो गया है और इसमे कोई सन्देह नही कि यह प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा। उनका स्वामी जी महाराज से बड़ा पुराना परिचय है और उन्हें उनकी कार्य-क्षमता पर पूर्ण विश्वास है। श्री मिर्धा जी ने आगे कहा कि उन्होने रजवाडो मे वह युग देखा है जिसमे कुछ व्यक्तियो को छोड कर कोई भी शिक्षा प्राप्त नही कर सकता था। छोटे-छोटे अपराधों पर बड़े भारी दण्ड दिये जाते थे। अब परिवर्तन हो गया है और शिक्षा तथा अन्य सभी सुविधाये राजस्थान मे प्राप्त हो चुकी हैं।

अन्त मे विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. अनन्तानन्द जी ने माननीय अतिथि का धन्यवाद किया।

सभा से पूर्व श्री मिर्धा जी विद्यालय, संग्रहालय, पुस्तकालय, विज्ञान महाविद्यालय और आयुर्वेद महाविद्यालय आदि देखने गये। वर्षा होते हुए भी श्री मिर्धा जी अपने कार्य-क्रम मे व्यस्त रहे। पर जब वृक्षारोपण का समय आया तो सौभाग्य से वर्षा रुक गयी थी।

कार्यक्रम के पश्च'त् सभी कुलवासियो ने श्री मिर्धा जी को भाव भीनी विदाई दी।

आई० ए० एस० आफिसरों का गुरुकुल आगमन

आई० ए० एस० एव एलाइड सर्विसेज के ३० आफिसरो का एक दल गुरुकुल आया और उन्होने विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे निवास किया। वे लगभग एक सप्ताह तक ठहरे। दिनांक २६ अगस्त की संध्या को ५ बजे उनका विदाई समारोह सीनेट हाल में हुआ। इस समारोह में श्री गणेशदत्त जी पुनेठा रेजीडेंट मजिस्ट्रेट, हरिद्वार, डॉ० गंगाराम, कुलपति, श्री के० पी० गुप्ता, प्रिंसिपल, प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कागडी एव अन्य महानुभावो ने भाग लिया। आरम्भ मे आई० ए० एस० आफिसरो की ओर से श्री सुन्दर मूर्ति जी ने गुरुकुल का धन्यवाद किया कि उन्होने उनके निवास आदि का प्रबन्ध किया।

एक सभा हुई जिसमें डॉ० गंगाराम ने आई० ए० एस० आफिसरो को संबोधित करते हुए कहा कि भारत का आई०ए०एस० आफिसर प्रतिभा मे अंग्रेजी आई०सी०एस० से कम नही है। जबकि आई सी.एस आफिसर एक शासक था और वह अंग्रेज सरकार के प्रति उत्तरदायी था, आज का आई०ए०एस० आफिसर शासक होते हुए जनता के प्रति उत्तरदायी है। यह है वह भेद-रेखा जो कि इन दो प्रकार के अफसरों को अलग करती है। आई०ए०एस० आफिसरो की जिम्मेदारी वर्तमान प्रजातन्त्रो मे बहुत अधिक है। अन्त में सुझाव देते हुए श्री कुलपति ने कहा कि अधिकांश अंग्रेज आफिसरो की यह कार्य प्रणाली थी कि वे अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त देश की समृद्धि के लिए साहित्य की खोज, प्राचीन अवशेषों के आधार पर संस्कृति की खोज, भारत की वनस्पतियों, खनिज पदार्थ, पशु-पक्षी, भाषाओ आदि पर अनुसंधान करते थे। यह उपयुक्त रहेगा कि आप लोग भी कोई न कोई एक दिशा अपना लें।

जलपान के अवसर पर सभी आफिसरो ने यह

आश्वासन दिया कि वे अपने कार्य के अतिरिक्त अवश्य ही एक दिशा अपनायेंगे ।

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय का आचार्य पद पर स्वागत

सभी कुलवासियों को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय, एम.ए., पी-एच.डी., डी० लिट्० विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उपकुलपति नियुक्त हुए हैं। आपने अपने पद का भार १० अगस्त को ग्रहण कर लिया है। साथ-साथ आप संस्कृत विभाग में रीडर पद पर भी सुशोभित हैं। वेद, कला तथा विज्ञान महाविद्यालयों की ओर से डॉ. गंगाराम, कुलपति की अध्यक्षता में एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया। प्रारम्भ में सभी विभागों की ओर से उपाध्याय जी को मालाओं से लाद दिया गया। सभी विभागाध्यक्षों ने अपने-अपने विभाग की ओर से सहयोग के आश्वासन पर बल दिया। श्री बलजीत सिंह आर्य (जो उस समय कुलसचिव नहीं थे) ने सभा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि यह गुरुकुल का सौभाग्य है कि इतने उच्च कोटि के विद्वान आचार्य एवं उप कुलपति नियुक्त हुए हैं। प्रिंसिपल सुरेशचन्द जी ने कहा कि वे पूर्ण मनोवेग से उपाध्याय जी का सहयोग करेंगे। वे किसी भी बात में उन्हें पीछे नहीं पायेंगे। डॉ. गंगाराम जी ने कहा कि जिस प्रकार के व्यक्ति की कल्पना वे आचार्य एवं उपकुलपति पद के लिये कर रहे थे, वह आज साकार हो गई। उपाध्याय जी में वे सभी गुण हैं जो आचार्य में होने चाहिये। अन्त में डॉ. उपाध्याय जी ने विनम्रभाव से कहा कि वे अर्पित होकर गुरुकुल के वृक्ष को सिंचित करेंगे। बाद में छात्रों ने अपने आश्रम में श्री आचार्य जी, कुलपति जी, प्रिंसिपल सुरेश चन्द जी तथा प्रिंसिपल बलजीत सिंह आर्य के साथ सहभोज किया। ३० अगस्त को पुनः छात्रों की ओर से श्री आचार्य जी का अभिनन्दन किया गया।

दिनाक ३०–८–७६ को प्रातः १० बजे वेद आर्ट्स कालेज के समस्त छात्रों की ओर से आचार्य एवं उपकुलपति डॉ० वाचस्पति जी उपाध्याय का भव्य स्वागत किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ० अनन्तानन्द जी, प्राचार्य, आयुर्वेद महाविद्यालय ने की। इस अवसर पर आचार्य जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। स्वागत के साथ-साथ सभी विभागीय छात्र वक्ताओं ने आचार्य जी को यह विश्वास दिलाया कि हम सभी छात्र-बन्धु अनुशासन में रहकर पूर्ण कर्तव्य निष्ठा के साथ गुरुकुलीय गौरव को पुनरुज्जीवित करने के लिये कटिबद्ध हैं तथा प्रत्येक समस्या के समाधान हेतु साधक रूप में प्रस्तुत हैं। अध्यक्ष महोदय ने भी आचार्य जी का स्वागत करते हुये वेद-आर्ट्स कालेज के छात्रों को आह्वान किया कि वे गुरुकुलीय परम्पराओं के प्रति पूर्ण जागरूक रहें। साथ ही निराशा के वातावरण को फैलाने वाले तत्वों की निन्दा की।

छात्रों के द्वारा प्रदर्शित स्नेह व आदर भाव की

प्रति आभार प्रकट करते हुये श्रद्धेय आचार्य जी ने कहा कि हम सभी कुलवासी मित्र की भांति व्यवहार करते हुये कुलमाता की सेवा में सर्वात्मना तत्पर रहें।

इस सभा में मान्य अतिथि के रूप में श्री रामधारी जी शास्त्री, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व श्री अनूपसिंह जी शास्त्री मुख्याध्यापक भी उपस्थित थे।

सभा के अनन्तर जलपान का भी आयोजन छात्रों द्वारा किया गया।

संयोजक :

आनन्द कुमार

संस्कृत एम. ए. (द्वितीय वर्ष)

गुरुकुल के नये कुलपति डॉ० गंगाराम जी का भव्य अभिनन्दन समारोह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में दिनांक ३१-८-७६ को नये कुलपति डॉ० गंगाराम जी का आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमंत्री श्री रामधारी जी शास्त्री की अध्यक्षता में स्वागत समारोह हुआ जिसमें पंचपुरी की जनता एवं समस्त कुलवासी उपस्थित थे। डॉ० गंगाराम कार्यवाहक कुलपति थे पर २८ अगस्त से उन्हें विश्वविद्यालय के विजिटर स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज ने कुलपति नियुक्त कर दिया और उन्होंने अपने पद का भार ग्रहण कर लिया। २८ अगस्त से ही प्रिंसिपल बलजीत सिंह जी आर्य ने कुलसचिव का पद ग्रहण किया। वन्दना का कार्य-क्रम एम.ए. के विद्यार्थी सत्यकाम व नारायणदेव ने किया। तत्पश्चात् स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। नये कुलपति को सभा के उप मंत्री रामधारी शास्त्री, डॉ० वाचस्पति उपाध्याय, आचार्य, प्रो० बलजीतसिंह आर्य कुलसचिव, श्री अनन्तानन्द जी प्रिंसिपल आयुर्वेद महाविद्यालय, श्री सुरेश चन्द्र त्यागी प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय, अनूपसिंह शास्त्री, मुख्याध्यापक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार, स० मुख्याधिष्ठाता, डॉ० काश्मीर 'राही', आचार्य किशोरी दास जी वाजपेयी, पू० पू० प्राचार्य पं० सुखदेव जी, ज्वालापुर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० अकिंचन, पू० पू० विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री फकीरचन्द जी, वैद्य धर्मदत्त एवं रामप्रसाद जी, श्री सदाशिव भगत, डॉ. अम्बिका प्रसाद जी वाजपेयी, श्री ओमप्रकाश जी मिश्र, डॉ० अभेदानन्द, डॉ० विनोद चन्द जी सिन्हा, डॉ० चम्पत स्वरूप, डॉ० विजय शंकर, श्री बुद्ध प्रकाश शुक्ल, श्री रामकुमार पालीवाल तथा पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जबर

डॉ० विनोद चन्द जी सिन्हा, रीडर, प्राचीन इतिहास
विभाग एव संग्रहालयध्यक्ष कुलपति को
माल्यार्पण करते हुए ।

कुलपति के अभिनन्दन समारोह का एक दृश्य । दायें कक्ष
कक्ष मे उपाध्याय वर्ग विद्यमान है ।
अग्रिम पक्ति में ठीक दाईं ओर चश्मा लगाये ज्वालापुर
महाविद्यालय के प्रिसिपल डॉ० अकिंचन तथा उसी
पंक्ति मे चौथे स्थान पर गुरुकुल पत्रिका के
सम्पादक रामाश्रय मिश्र बैठे है ।

कुलपति डॉ० गंगाराम के अभिनन्दन समारोह का एक दृश्य। बाईं ओर के कक्ष मे महिलाएं और छात्र बैठे हैं। महिलाओं के ठीक पीछे दाईं ओर पं० गणपति वेदालंकार विद्यमान है।

कुलपति डॉ० गंगाराम के अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के उपमंत्री श्री रामधारी सिंह जी शास्त्री कुलपति का अभिनन्दन करते हुए।

सिंह सेंगर, कार्यालय अधीक्षक श्री प्रताप सिंह जी, श्री जिलेसिंह जी और संख्यानक श्री साधूराम जी एवं विश्वविद्यालय के छात्र आनन्द कुमार ने माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया। इससे पूर्व वैदिक राष्ट्रीय गान हुआ और तत्पश्चात् स्वागत गान।

श्री विक्रम व ब्र० नरेन्द्र दशम् एवं डॉ. काश्मीर 'राही' आदि ने सहायता का पूर्ण आश्वासन दिया। विद्यालय प्राध्यापक श्री अनूप सिंह जी शास्त्री ने अभिनन्दन को नये युग की आधार शिला की संज्ञा दी। विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेश चन्द त्यागी ने गुरुकुलीय शिक्षा एव अधिकारियों की कथनी करनी एकता पर बल दिया। आगे उन्होने कहा कि यदि आर्यसमाज को एक पलड़े मे तथा गुरुकुल को दूसरे पलड़े मे रखा जाय तो गुरुकुल का पलडा ही भारी होगा। डॉ० अनन्तानन्द जी ने नये कुलपति की तुलना श्री लालबहादुर शास्त्री से की तथा शास्त्री जी की भांति वे भी जनता के प्रतिनिधि हैं। डॉ० गंगाराम जी से उनका घनिष्ट सम्बन्ध है। वे २४ वर्षों से गुरुकुल मे हैं – पहले अंग्रेजी के उपाध्याय के रूप मे और १० वर्षों से कुलसचिव के रूप में। विश्वविद्यालय की समस्याएं उनके लिये नई नहीं हैं। मैं उन्हें पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

बी० एस-सी० के छात्र हिमांशु द्विवेदी ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलसचिव प्रो. बलजीत सिंह जी आर्य ने कहा मैं स्वागत भाषण देने नहीं खड़ा हुआ हूं अपितु-जिम्मेदारी भाषण प्रस्तुत करूंगा स्वागत भाषण तो एक वर्ष बाद प्रस्तुत करूंगा। आर्य समाज में कुछ तथाकथित मठाधीश युवापीढ़ी के कार्यकर्ताओं को कुचलने की कोशिश कर रहे हैं किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिलेगी यह पद का सघर्ष नहीं तन्त्र का सघर्ष होना चाहिये। युवा कार्यकर्ता ऐसे मन्त्र फूंक रहे हैं जिससे किसी भी संस्था की सभी इकाइयां कार्यशील हैं तथा निरन्तर की गतिशीलता ही उत्थान का द्योतक है। मेरी कर्मचारियों से प्रार्थना है कि किसी की शिकायत न करें। नवीन योजनाएं प्रस्तुत कर गुरुकुल का उत्थान करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपमंत्री पं० रामधारी शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अधिकार एवं कर्त्तव्य स्पष्ट कर दिया तथा गुरुकुल संस्था रूपी यज्ञ में समिधा बनने एवं आहुति देने की प्रेरणा दी। साथ ही इस तथ्य पर बल दिया कि किसी की आलोचना से पूर्व अपने अन्दर झांकें। क्योंकि जब किसी की ओर एक अंगुली उठाते हैं अर्थात् निन्दा करते हैं तो शेष तीन उंगलियां अपनी ही ओर आती हैं। जो संघर्ष से डरता है वह कुछ नहीं कर सकता वह व्यक्ति रस निकले हुए गन्ने की खोई के समान है। संघर्ष विहीनता ही मरण है।

अपने स्वागत एवं अभिनन्दन का उत्तर देते हुए डॉ० गंगाराम जी ने अति विनम्र शब्दों में कहा कि यह स्वागत मेरा नहीं आपका ही है। क्योंकि मैं भी आप में से ही एक सिपाही हूं जनरल नहीं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री इन्द्रवेश के आदेशानुसार आया हूं जब तक उनका आदेश होगा मैं हंसता

रहूँगा और जाता हुआ भी दूंगा। मैं इसे परमात्मा का आदेश समझता हूँ। परमात्मा की इच्छानुसार ही कार्य करूंगा। साथ ही उन्होंने कहा कि वे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा सभी भूतपूर्व कुलपतियों से प्रेरणा लेकर कार्य करेंगे। गुरुकुल की दिशाहीन नौका को दिशा देना एवं समन्वय की भावना उत्पन्न करना ही मेरा एक मात्र उद्देश्य होगा। प्राचीनता एव नवीनता तथा विज्ञान एवं संस्कृति के समन्वय के बिना संस्था राष्ट्रीय-आदेश का उन्नयन नहीं हो सकता।

विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं आचार्य डॉ० वाचस्पति उपाध्याय ने अत्यन्त सफलता एवं मनोरम ढंग से समारोह का संचालन किया। अपने अभिनन्दन में उन्होंने "काम अधिक बातें कम" का उद्बोधन किया।

शान्ति पाठ के बाद सभा विसर्जित हुई।

संयोजक :

डॉ० वाचस्पति उपाध्याय

आचार्य एवं उप कुलपति

गुरुकुल डायरी

मई – अगस्त, १९७९

मई — १- संरक्षक सभा

१- आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार मे प्रतिनिधि चुनाव ।

२- पंचपुरी तैराकी प्रतियोगिता ।

जून — १८- उच्चस्तरीय उप वित्त समिति की बैठक, दिल्ली ।

१९- उच्चस्तरीय संविधान समिति की बैठक, दिल्ली ।

जुलाई — ७- डॉ० गंगाराम, कार्यवाहक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता नियुक्त ।

१४- डॉ० गंगाराम राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की बैठक में सम्मिलित ।

१५- डॉ० गंगाराम राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की बैठक में सम्मिलित ।

१५- आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी का गुरुकुल आगमन ।

१५- स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में शिक्षकों एवं कर्मचारियो की बैठक ।

१६- डॉ० गंगाराम कार्यवाहक कुलपति ने स्वामी इन्द्रवेश को विश्वविद्यालय का कुलाधिपति स्वीकार किया ।

१७- महामहिम चेन्ना रेड्डी को डॉ० गंगाराम द्वारा भक्ति आश्रम मे माल्यार्पण ।

१८- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिष्ट–परिषद् एवं विद्या सभा की बैठक ।

२०- स्वामी इन्द्रवेश कुलाधिपति की अध्यक्षता मे छात्र संख्या विषयक प्राध्यापको की बैठक ।

अगस्त — ८- श्री नाथूराम मिर्धा का स्वागत एवं वृक्षारोपण ।

९- अमृत वाटिका में श्रावणी पर्व समारोह ।

१०- डॉ० वाचस्पति उपाध्याय की आचार्य एवं उपकुलपति के रूप में नियुक्ति ।

१२- डॉ० वाचस्पति उपाध्याय का विश्वविद्यालय प्राध्यापकों द्वारा स्वागत ।

१५- स्वतन्त्रता दिवस समारोह, कुलपति द्वारा परेड निरीक्षण एवं स्वतन्त्रता संदेश ।

१८- जन्माष्टमी समारोह ।

२६- डॉ० गंगाराम द्वारा विश्वविद्यालय में आये हुए आई० ए० एस० आफिसरों को प्रेरणात्मक संदेश ।

२८- प्रो० बलजीत सिंह आर्य कुलसचिव नियुक्त ।

२८- डॉ० गंगाराम की डी० एम०, आर० एम०, डी० एस० पी० से भेंट ।

३०- डॉ० वाचस्पति उपाध्याय का विश्वविद्यालय छात्रों द्वारा स्वागत ।

३१- डॉ० गंगाराम की आर० एम० से भेंट ।

३१- नव नियुक्त कुलपति डॉ० गंगाराम का अभिनन्दन ।

रामाश्रय मिश्र
जन-सम्पर्क अधिकारी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार ।

अभिनन्दन समारोह में डॉ० गंगाराम, कुलपति,
स्वागत का उत्तर देते हुए।